चन्दामामा
दीपावली विशेषांक
75
नP
Vapa

Ooof..... Reaching the Moon!
Swift but hazardous Journeying
Around the Unknown!!
Oh... No, For Printing,
Simple or Colourful
travel not around the town,
Come straight to the Wellknown!!!
THE BNK PRESS (P) LTD.,

हमारे सभी ग्राहकों, मित्रों तथा शुभचिंतकों को
दीपावली के शुभ-अवसर पर हार्दिक अभिनंदन

★

व्यापारी भाईओ, सेन्टोमिक्स, फिलोशीन, आरामपामा
और जाई कज्जल केलेंडर की संयुक्त उपहार योजना
के लिए लिखें

रत्नकी तरह
चमकदार
आँखोंके
लिये

जाई काजल

आँखों को ठंडक
पहुँचाकर सौंदर्य
बढ़ाता है।

वेस्टर्न इन्डिया केमिकल कं.
बम्बई-२

SHAH ADVT.

नवम्बर १९६२

★

विषय - सूची

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
(डाबर बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

पौष्टिक तत्वों के अभाव को
दूर करने वाला, बढ़िया, कम खर्चवाला तथा
वैज्ञानिक तरीकों से तैयार किया गया।

आनन्दायक स्वाद, जिसे चाय, काफी, दूध, हलुआ, फल के रस इत्यादि के साथ लिया जा सकता है। आल्बो-सांग शिशुओं, बढ़ रहे बच्चों व प्रसव के बाद माताओं, मानसिक परिश्रम करने वालों तथा बड़े-बूढ़ों के लिए बढ़िया पोषक तत्व प्रदान करने वाला खाद्य है। यह बीमारी छूटने के बाद स्वास्थ्य सुधार, दुर्बलता तथा रक्तहीनता दूर करता है।

पावडर तथा टिकिया
दोनों मिलती है

जे. एंड जे. डीशेन,
हैदराबाद (दक्षिण)

Subscribers who need changes in their addresses are requested to write to us before the 5th of a month, mentioning their subscription number. Requests received after that date will receive attention only during the first week of the subsequent month. Their co-operation is solicited.

CIRCULATION MANAGER

कमला लक्ष्मण
की
प्रशंसा पात्र
फैशन
नमूना
इन
के लिए
रंग रंग के
सभ्यता
श्री
वेन्कटेश्वर
सिल्क साड़ियाँ
श्री वेन्कटेश्वर
सिल्क पैलेस
"ROOPMANDIR"

LIFEBUOY
लाइफ़बॉय है जहाँ,
तंदुरुस्ती है वहाँ!
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

पिछले कई वर्षों से मैं 'चन्दामामा' की पाठिका हूँ। सम्पूर्ण हिन्दी की कहानियों की पत्रिकाओं में मुझे 'चन्दामामा' के समान उत्तम कथानकयुक्त हास-परिहास से परिपूर्ण पत्रिका देखने को न मिली।

साहित्यिक दृष्टि कोण से यह उतनी साहित्यिक पत्रिका नहीं है, फिर भी यह अपनी सरलमय भाषा एवं उच्च कोटि के हास-परिहास के कारण यह अपने अगणित पाठकों के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है।

मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

कुमारी तारा माहेश्वरी, छिन्दवाड़ा

दिसम्बर अंक में 'सिन्दूर की रक्षा' उच्च कोटि के साथ ही प्रशंसनीय है। अन्य रचनायें भी सुन्दर रहीं। यदि आप राम और श्याम का स्तम्भ पुनः आरम्भ कर दें तो पत्रिका की शोभा दुगनी हो जावे।

महेशकुमार 'उदय', कन्नौजी

मैं "चन्दामामा" लगभग चार साल से पढ़ता आ रहा हूँ। "चन्दामामा" एक बहुत ही प्रिय पत्रिका है। इसकी सब कहानियाँ प्रशंसायोग्य हैं। "चन्दामामा" को मैं एक ही दिन में पढ़ लेता हूँ। अच्छा हो यदि इसकी पृष्ठ संख्या में वृद्धि हो। मेरा यह भी सुझाव है कि हर त्यौहार के विशेषांक निकाले जाएं।

विजयकुमार बोथरा, मुजफ्फरनगर

मैं इस साल से प्रिय पत्रिका चन्दामामा पढ़ता आ रहा हूँ। चन्दामामा हमारे घर के सभी बहुत चाव से पढ़ते हैं। कहानियाँ बड़ी ही दिलचस्प और चित्र बहुत ही लुभावने होते हैं। यदि आप चन्दामामा में मनमोहन परिशिष्ट की तरह वर्ग पहेली दें तो यह पत्रिका और भी सुसज्जित हो उठेगी। मेरे विचार से चन्दामामा जैसी दूसरी कोई भी पत्रिका नहीं है।

सच्चिदानन्द गुप्त, हावड़ा

पनामा

सौन्दर्य प्रसाधने

मनमोहक
सौन्दर्य के
लिये

NOW a talc with "skin-softening oils"....
Binaca TALC
Cool, refreshing Binaca Talc has added to it "Skin Soothing Oils" which leave your skin soft and silky smooth.
It controls perspiration odours throughout the day, and its tantalising perfume just lingers and lingers and lingers.
the talc with deodorant by CIBA

LESSEES

VIJAYA STUDIOS

and

VAUHINI STUDIOS

MADRAS
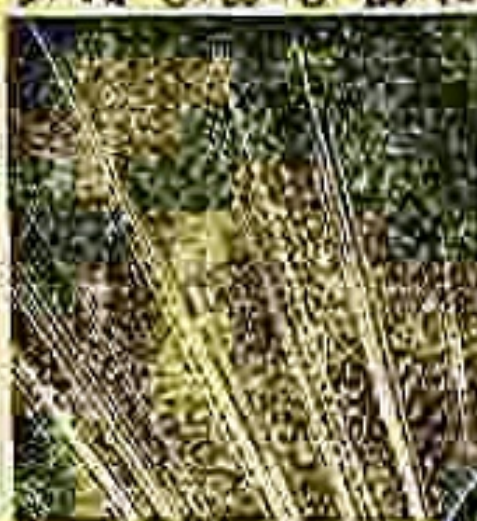
SUN
वॅक्युम फ्लास्क
सबों का परिचित
तथा
आवश्यक
दीपावली का उपहार
शुभकामना
विक्टरी फ्लास्क कंपनी
प्रायवेट लिमिटेड,
बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास.

आप अपनी
त्वचा को चमकाइये।
रेमी
सौन्दर्य सहायक :
कोल्ड क्रीम, स्नो,
पावडर, हेयर आइल,
साबुन और ब्रीलिन्टीन
एवं पोमेड इत्यादि।
ए. डी. आर. ए. एंड कं०., बम्बई २ - कलकत्ता १ - मद्रास १

बच्चे देश के रतन हैं...
इनका पोषण जतन से कीजिए !
ये हँसते-खेलते,
किलकारियाँ मारते बच्चे
हमारे देश के
भावी नागरिक हैं।
इनके स्वास्थ्य की नींव
जितनी ही पक्की होगी
हमारे देश का भविष्य
उतना ही उज्ज्वल बनेगा।
अपने लाड़ले बच्चों को पौष्टिक,
स्वादिष्ट और करारे
साठे बिस्कुट नियमित रूप से
खिलाइए और फिर देखिए,
कि वे कितने खुश
और तन्दुरुस्त रहते हैं।
SATHE'S MILK CHOCOLATE
SATHE'S drinking chocolate
साठे
बिस्कुट और चॉकलेट
साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२.

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

"चन्दामामा" की गति ही कुछ ऐसी है कि समय शायद पंख लगाकर चलता है।

लगता है जैसे कल ही दीपावली थी, अब फिर आ गई है। और दीपावली के साथ "चन्दामामा" का दीपावली अंक भी।

पाठक हमारा दीपावली अंक विशेष चाव से पढ़ते आये हैं। कई निरन्तर अनुरोध भी करते आये हैं कि हम और भी विशेष पर्वों पर ऐसे अंक निकाला करें। हम आशा करते हैं कि यह अंक भी पाठकों का मनोरंजन कर सकेगा।

वर्ष: १४ नवम्बर १९६२ अंक: ३
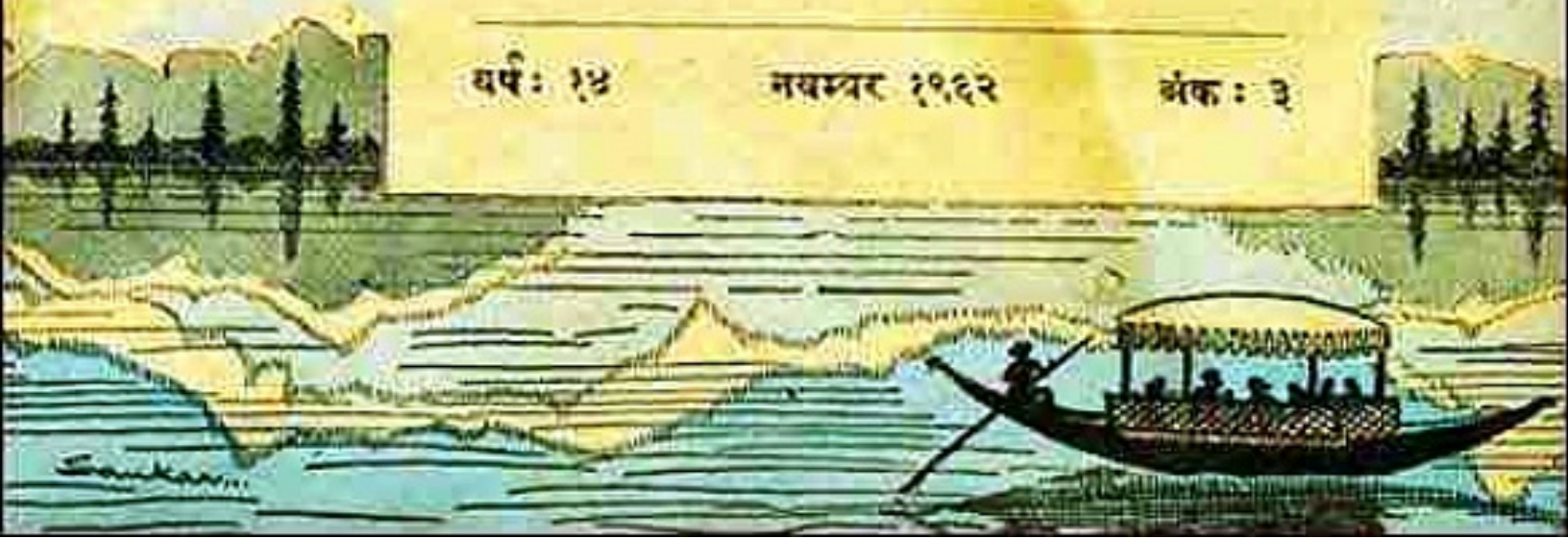
भारत का इतिहास

गौड़, वंग देश बहुत प्राचीन हैं। पुराण काल से हैं। मौर्य और गुप्त समय में, ये मगध साम्राज्य में थे। ७-८ वीं सदी में, गौड़ देश भी कान्यकुब्ज और काश्मीर की तरह शक्तिशाली था। पाल वंश के राजाओं ने वंग देश को प्रसिद्ध कर दिया। पाल वंश का मूल पुरुष गोपाल "बंगपति" और "गौड़ेश्वर" नाम से विख्यात हुआ। इसका लड़का धर्मपाल आठवीं सदी के उत्तरार्ध में गद्दी पर आया। इसके परिपालन में प्राचीन पाटलीपुत्र फिर उज्वल हुआ। इसका शासन हिमालय से गोकर्ण तक था। परन्तु मध्य प्रदेश में इसके प्रभाव को राष्ट्रकूट और पश्चिम में प्रतिहारों ने रोका। इसका जीता कान्यकुब्ज ८३६ से पहिले ही प्रतिहारों के वश में आ गया था।

धर्मपाल के लड़के देवपाल ने पश्चिम और दक्षिण देशों से युद्ध प्रारम्भ किये। सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) के राजा, बालपुत्रदेव ने उसके पास दूत भेजे। फिर पाल वंश का प्रभाव कम होता गया। इसके बाद बेन्गाल में भी प्रतिहार और काम्भोईज ने राज्य किया। परन्तु ग्यारहवीं सदी में प्रथम महीपाल ने पाल वंश का पुनरुद्धार किया। लेकिन १२ वीं सदी में विजयसेन नाम के कर्णाक राजा ने बेन्गाल को पराजित कर वहाँ शासन भी किया।

कहा जाता है कि पाल वंश से कान्यकुब्ज को लेनेवाले प्रतिहार लक्ष्मण के वंशज थे। प्रतिहारों में प्रथम भोज उनका लड़का था और उसका लड़का था प्रथम महेन्द्रपाल। ये प्रतिहारों में मुख्य थे।

१०१८ में कान्यकुब्ज में राज्यपाल प्रतिहार जब राज्य कर रहा था, तब मोहम्मद गज़नवी ने आक्रमण किया। उसके बाद प्रतिहार वंशज छोटे मोटे राजाओं के रूप में इधर उधर बिखर गये।

दूसरी सदी में गौतमी पुत्र यज्ञश्री सातकर्णी के कारण सातवाहन वंश का प्रताप भी बढ़ा। परन्तु उनका स्थान ईक्ष्वाकु बृहत्फल, शालंकायन आदि ने लिया, बीरार प्रान्त में वाकाटक उन्नत हुए। जब समुद्रगुप्त ने दक्षिण पर आक्रमण किया तब विन्ध्या से दक्षिण के प्रान्त में राज्य करनेवाले मुख्य राजवंश थे वाकाटक और पल्लव।

चौथी सदी में विष्णु गोप पल्लव नाम का राजा, समुद्रगुप्त द्वारा पराजित होकर छोड़ दिया गया। पल्लव राजाओं में प्रसिद्ध था शिवस्कन्दवर्मा इसने अश्वमेध यज्ञ भी किया।

पल्लवों की राजधानी कांची थी। उनमें से कई ने तेलुगु और कन्नड़ प्रान्तों पर भी शासन किया। विदित होता है कि ४३६ में सिंहवर्मा पल्लव वंश की गद्दी पर आया।
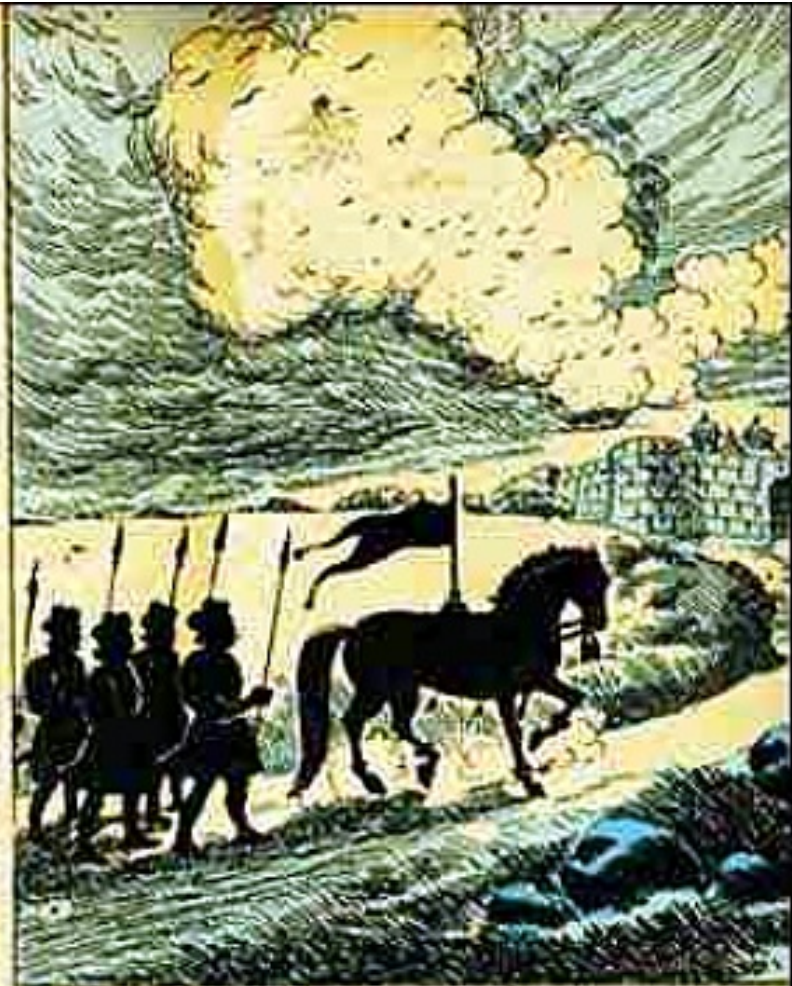
छठी सदी के उत्तरार्ध में सिंहविष्णु रायनामक पल्लव के बारे में बहुत कुछ विवरण मिलते हैं। इसने चोल राज्य और सुदूर दक्षिण और लंका को भी अपने वश में कर लिया। यह वैष्णव था। इसकी, और इसकी दो पत्नियों की मूर्ति अब भी महाबलिपुरं में है।

सिंहविष्णु का लड़का प्रथम महेन्द्रवर्मा था। इसके समय में दक्षिण के राज्य के लिए वातापि के चालुक्यों और पल्लवों का युद्ध प्रारम्भ हुआ, जो कई पीढ़ियों तक चलता रहा। यदि चालुक्य वंश के

द्वितीय पुल्केशी ने पल्लवों को हराया तो महेन्द्रवर्मा के पुत्र प्रथम नरसिंहवर्मा ने चालुक्यों को हराया। द्वितीय पुल्केशी के पुत्र प्रथम विक्रमादित्य ने पल्लवो पर आक्रमण किया। आठवीं सदी में उसके परपोते, द्वितीय विक्रमादित्य ने पल्लवों को पराजित करके कांची को आधीन कर लिया। पान्ड्यों ने भी पल्लवों पर आक्रमण करके अपने राज्य का कावेरी तट तक विस्तार किया। आखिर ९ वीं सदी के अन्त में आदित्य चोल ने अपराजित पल्लव को हराकर पल्लव वंश को नष्ट कर दिया।

भारत के इतिहास में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पल्लवों का विशेष स्थान है। प्रथम उन्होंने दक्षिण में विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उनका प्रभाव लंका तक था। उनके समय में कई वैष्णव (आल्वार) और शैव (नायनार) प्रसिद्ध हुए। उनके समय में कंची हिन्दु और बौद्ध संस्कृति का केन्द्र था "विचित्र चित्त" की उपाधिवाले प्रथम महेन्द्रवर्मा ने गुहा शिल्प को प्रोत्साहित किया। उसने "मत्त विलास प्रहसन" नामक प्रहसन भी लिखा। पुदुक्कोट रियासत के एक गुफ़ा में प्राप्त चित्र, कहा जाता है, इसी के समय में बनाये गये थे। इसका लड़का था नरसिंहवर्मा महामल्ल। इसी के नाम पर महाबलिपुरं (महामल्लपुरं) बना। यहाँ की कला देखने के लिए लोग देश विदेशों से आते हैं। राजसिंह नरसिंहवर्मा नामक पल्लव राजा ने कंची के कैलाशनाथालय का निर्माण करवाया।

कुमार संभव

शरवण ताल मनोहर उज्ज्वल
दर्पण-सा आकार,
सखी गगन में लक्ष्मी अपनी
छवि है रही निहार।

ऋषियों की भार्याएँ वापस
जातीं कर स्नान,
हंस परों में लिपटे आते
शावक-धेनु समान।

फैलाये थे तट पर तरुवर
नभ में अपनी बाँह,
नीचे सघन सुशीतल जिनके
थी सुखकर अति छाँह।

वहीं सप्तऋषियों ने अपना
यज्ञ एक था ठाना,
गुँजा रहे वन-प्रांतर को
मंत्र पाठ कर नाना।

किया होम के हेतु उन्होंने
अग्निदेव का जब आह्वान,
स्वाहा को ले साथ अग्नि तब
आये तेज निधान।

ऋषिगण आहुति लगे डालने
शुरू हुआ यों याग,
अग्निदेव सब देवों को थे
देते जाते भाग।

ऋषियों की भार्याएँ भी थीं
सभी वहाँ सुकुमार,
जुटा रही थीं सभी वस्तुएँ
जो जिनकी दरकार।

अग्नि हुए उनको लख मोहित
चंचल बने हठात्,
करने लगा हृदय पर उनके
कामदेव आघात।

तृतीय अध्याय] [“भारतीभक्त”

आँचल छूने हाथ बढ़ाते
आतीं जब वे पास,
मुनियों ने जब देखलिया यह
हुआ अग्नि को त्रास।

सहम गये वे भय से उनके
कहीं न दे दें शाप,
मुनियों के मन में भी संशय
का था दुस्सह ताप।

मंत्र गलत थे पढ़ते रह-रह
गरमाया था माथ,
गिर जाती बाहर ही समिधा
हाथ न देते साथ।

स्वाहा देवी देख रही थी
यह सारा व्यापार,

साथ पत्नियों के मुनियों की
निज पति का व्यवहार

किसी तरह यह यज्ञ अंत में
पूरा हुआ अभी,
अपने अपने घर को सारे
मुनिगण गये सभी।

निकल अग्नि भी होमकुंड से
लेट गया जाकर बाहर,
नाच रही थीं दृग में उसके
छवियाँ सुंदर आकर।

फिर उठकर अनमना वहां से
आया झील किनारे,
बैठ गया वह एक शिलापर
दोनों टाँग पसारे।

दिनकर डूबे अस्ताचल पर
आयी सांझ सुहानी,
हुए बंद कमलों में बेसुध
भूले भ्रमर कहानी।

हंस छिपे नीड़ों में जाकर
उतरी आखिर रात,
काली-काली रात, गगन में
तारों की बारात।

दीप जले मुनियों के घर में
जुगनू लगे चमकने,
आभा दीपों की, तारोंकी
जल में लगी मचलने।

तभी खोजती अपने पतिको
स्वाहा देवी आयी,
देख शिला पर बैठे, लौटी
जैसी ही थी आयी।

घर आ उसने अंगिरस की
पत्नी का-सा वेश बनाया,
और सरोवरतट पर आकर
पति पर डाली माया।

अग्नि उसे पहचान न पाये
देखा कौन खड़ी है—
अरे, अंगिरस मुनिकी पत्नी
आकर यहाँ खड़ी है!

भूल गये वे सुधबुध अपना
उठकर बोले—"सुकुमारी,
कैसे आयी यहाँ अकेली
रात बहुत अंधियारी!"

स्वाहा बोली हँसकर उनसे—
"आप यहां तो क्या भय है?
रात सुहा लगती, मन तो
मेरा बना अभय है!"

कहा अग्नि ने—"चतुरे, यों मत
बातों में भरमाओ,
पत्नी हो क्या अंगिरस की
सच-सच मुझे बताओ!"

स्वाहा ने तब कमल-पुष्प ले
कर में जरा हिलाया,
और फेंककर चितवन तिरछी
सिर को तुरत झुकाया।

आतुरता तब बढ़ी अग्नि की
पूछा—"नाम बताओ अपना!"
स्वाहा बोली—"श्रद्धा मेरा
नाम, मगर क्या उसको अपना?"

कहा अग्नि ने—"तब तो मेरा
सच निकला अनुमान,
पत्नी हो तुम अंगिरस की
गया तुरत ही मैं जान।"

बोली हाथ कमर पर रख यह—
"सुनो, खोलकर कान!
जिसमें पौरुष-तेज उसी पर
देती हम तो जान।

विवश पत्नियां हम मुनियों की
तुमपर ही है आशा,
कहो, नहीं क्या पूर्ण करोगे
हम सबकी अभिलाषा!

पहले मैं ही आयी प्रियतम,
लेने मन का भेद,
आह, रात यह बड़ी सुहानी
जी को रही कुरेद!"

यह कह वह तो लगी देखने
आंखों ही में आँखें डाल,
पूछो नहीं कि अग्निदेव का
तभी हुआ सहसा क्या हाल!

[१६]

[केशव और उसके साथी दो जंगली युवकों के साथ अह्लापुर के सैनिकों की आँखों में धूल झोंक कर, एक सुरंग के रास्ते नदी में उतर, फिर वे एक प्रपात में फंस गये। आखिर सुरक्षित हो वे नदी में तैरने लगे। पर वे किनारे पर पहुँच रहे थे कि उनको वहाँ वन्य जाति के कुछ लोग दिखाई दिये। बाद में]

नदी के किनारे वन्य जातिवालों को खड़े खड़े अपनी ओर देखते हुए जान जंगली युवक घबरा उठे। वे उनकी जाति के न थे। उन दोनों की जातियों में विरोध था। उनको उनका नज़र आना ही गँवारा न था। जब वे प्रपात में गिरे थे, सिवाय एक तल्वार के उनके सब हथियार पानी में बह गये थे।

"ज्येष्ट, कनिष्ट, क्या तुम्हारे हथियार सब ठीक हैं! ये जो खड़े हैं, मालूम नहीं कि वे शत्रु हैं अथवा मित्र! वे पाँच से अधिक नहीं मालूम होते। अगर लड़ना ही पड़ेगा, तो हमारे हथियार ही हमारी रक्षा करेंगे।" केशव के बूढ़े पिता ने कहा।

केशव और जयमल्ल ने सिवाय तल्वार के, जो उनकी कमर में लटक रही थी,

जो पानी में से किनारे आ रहा था। तुरन्त वह घबराकर चिल्लाया—"अरे, ये पाँचों तो बड़े हट्टे कट्टे हैं, हम इन सबको कैसे पकड़ पायेंगे। उनको भी बुलाओ।" उसने एक तरफ़ मुड़कर अपना हाथ हिलाया।

"ओह, कलिंह! इन दुष्टों की ख़बर तुम लो, इस बीच जो उन लोगों की मदद करने आयेंगे, हम उन्हें परलोक भेजेंगे।" कहता बूढ़ा किनारे पर कूदा और पेड़ों की ओर भागने लगा। उसके पीछे पीछे जंगली युवक भी भागे।

सब हथियार पानी में डाल दिये थे और उन लोगों के पास भी बाण वगैरह न थे।

इस हालत में वे उनका दूर से कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। जयमल्ल और केशव के यों सोचते सोचते ज्यों ही पैर ज़मीन पर लगे, उन्होंने तैरना छोड़ दिया और किनारे की ओर चलने लगे।

इतने में वन्य जातिवाला पीछे मुड़कर ज़ोर से चिल्लाया। तुरन्त एक चट्टान के पीछे से एक मोटा-सा आदमी, जिसने सिर पर शेर का चमड़ा पहिन रखा था, वहाँ आया। उसकी नज़र केशव पर पड़ी,

केशव और जयमल्ल ने किनारे पर पहुँचते ही तलवार निकाली थी कि उन पाँचों ने उन पर हमला किया। वह मोटा आदमी हाँफते हाँफते इधर उधर घूमता चिल्लाया—"अरे, अच्छे लड़के हैं, यदि तुमने इनके हाथ पैर तोड़े, तो तुम्हारी जान निकाल दूँगा। उनके शरीर पर कोई चोट न आये। कहीं कोई घाव न लगे। होशियारी से पकड़ लो।"

जब वे उन पर बिजली की तरह आये तो जयमल्ल और केशव अपनी तलवारों का भी उपयोग न कर सके।

वे उन पर घूंसे मारने लगे। पैरों से चोट करने लगे। पर वे उनको नहीं पीट रहे थे। उनके पैर बाँधकर उनको नीचे गिराने का प्रयत्न कर रहे थे। आखिर कुछ क्षणों में अपने प्रयत्न में सफल भी हो गये। केशव और जयमल्ल को नीचे गिरा कर उन पर बैठकर, वे उनको रस्सियों से बाँधने लगे।

बूढ़े और जंगली युवक जिस तरफ गये, उस तरफ से पेड़ों के पीछे से चिल्लाना सुनाई दिया। "जरूरी हो, तो मार दो, पर उनको जीता भी न भागने दो।" कोई ज़ोर से चिल्ला रहा था। केशव जान गया कि उसका पिता और जंगली युवक किसी आफ़त में फँस गये थे। पर वह तो अब निहत्था था।

वन्य जातिवालों के मोटे सरदार ने केशव और जयमल्ल को गौर से देखते हुए कहा—"बड़े तगड़े लड़के हैं। मेरे नौकरों को उन्होंने खाली हाथ ही बुरी तरह धुन दिया है।" वह खद खद हँसने लगे।

"हमें, हमारी तलवारें दे दो। फिर तुम और तुम्हारे नौकर आयें मुकाबला करने अगर हिम्मत है तो," केशव शेर की तरह गरजा।
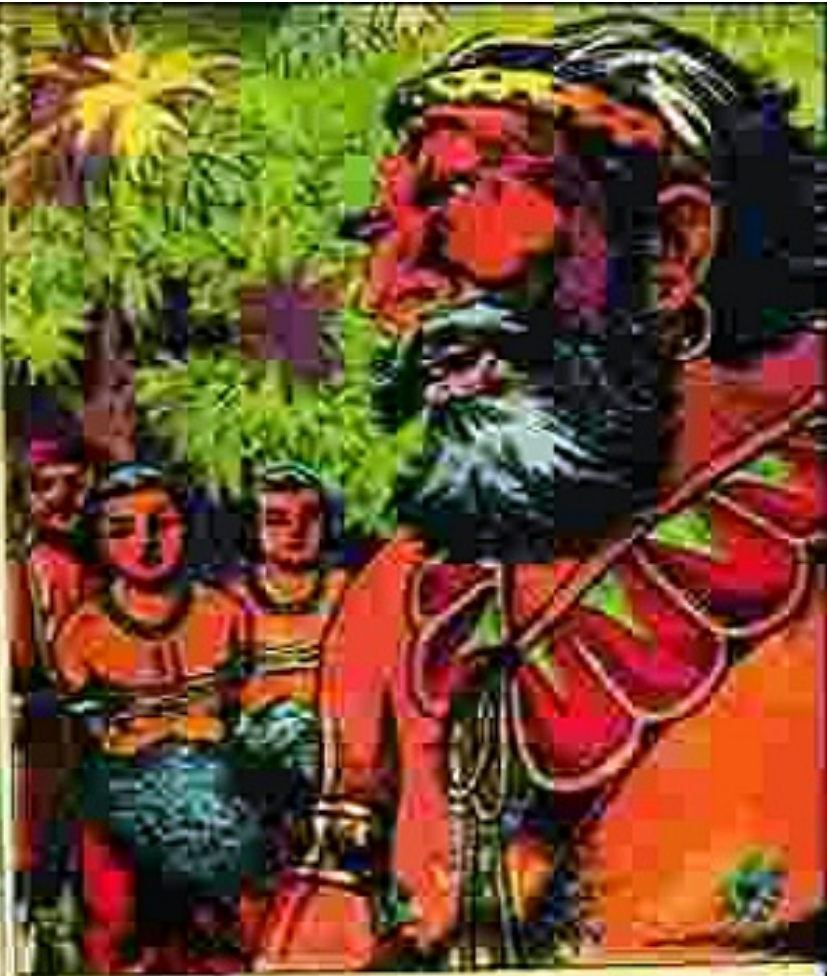
मोटे आदमी ने उनकी बातें सुनकर हँसकर कहा—"तलवार और भालों का उपयोग हुआ, तो कोई न कोई मरेगा ही और बहुत-सा धन भी व्यर्थ जायेगा।"

केशव और जयमल्ल ने एक दूसरे को देखा। वे तब जान गये कि वे दुष्टों के हाथ पकड़े गये थे। वे मनुष्यों को गुलाम बनाकर, बेचनेवाले नर राक्षस थे। इसलिए ही बिना उनको मारे ही, चोट किये ही पकड़ लिया था।

"बाबा का क्या हुआ है? कहाँ है? यहाँ तो सब कुछ शान्त मालूम होता है, नीरवता है।" केशव ने कहा।

जयमल ने सिर हिलाते हुए कहा— "तुम्हारे पिता और वे जंगली युवक भी हमारी तरह पकड़े गये हैं।"

"पेड़ों के पीछे से फिर किसी का ज़ोर से चिल्लाना सुनाई पड़ा। सबने उस ओर सिर मोड़कर देखा। देखते देखते वन्य जाति के चार लोग उनके दोनों जंगली अनुचरों को खींचकर ला रहे थे। मोटे सरदार ने उनको देख, दान्त कटकटाते हुए कहा—"तो दो मारे गये हैं, इनके साथवाले तीनों कहाँ गये? और बाकी लोग कहाँ हैं?"

"जब हमने उनको बिना चोट किये, पकड़ना चाहा, तो उन दुष्टों ने अपनी तलवारों से इन दोनों को मार दिया और दो को घायल कर दिया। वे नदी के किनारे भागे जा रहे थे कि हमारे लोगों ने पीछा किया।" उनमें से एक ने कहा।

वह मोटा सरदार गुस्से में काँपता हुआ चिल्लाया—"यानि अपने चार आदमी मारे गये और तुम दो ही पकड़ पाये। यानि दो का नुकसान रहा। अगर ऐसा ही काम चलता रहा, तो व्यापार हो चुका।"

उसके नौकर कुछ समय तक तो सिर नीचे किये खड़े रहे, फिर धीमे धीमे कहने लगे—"हुज़ूर, इन दोनों घायलों को भी तो डेरों के पास ले जाना है। उनको ज़रा मदद करने के लिए कहिये।" कहते हुए उन लोगों की ओर देखा, जो केशव और जयमाल को पकड़े हुए थे।

यह सुन मोटा आदमी चौंका, आँखों से अंगारे बरसाते हुए नौकरों पर गरमा—"तुमने जो किया, सो किया, अब साथी

चाहिये। ये पागल बुजदिल क्या डेरों तक पैदल नहीं जा सकते!"

"उनको ज्यादह चोट लगी है। एक के गले पर तलवार की चोट लगी है। दूसरे के पेट में। उनकी हालत अब और तब की है।"

नौकर ने अभी अपनी बात पूरी भी न की थी कि मोटा सरदार फिर जोर से चिल्लाया—"मरे कुत्तों के लिए, मरनेवालों के लिए क्या मैं व्यापार चला रहा हूँ? उन दोनों को, घायलों को नदी में घसीट दो और जल्दी जाओ। इस खून की गन्ध पा, शेर भी यहाँ आ सकते हैं।"

"छी, तुम मनुष्य नहीं हो। राक्षस हो। जिन्दों को पानी में फिकवाते हो।" केशव जोर से चिल्लाया और उसने अपने बन्धन तोड़ने का प्रयत्न किया।

केशव का चिल्लाना सुन, मोटा सरदार मुस्कराया। "जिसकी हालत अब तब की है, क्या फर्क है अगर वह जमीन पर मरता है या पानी में। यदि मैंने खून देख लिया, तो मेरा दिल धड़ धड़ करने लगता है। मेरा बड़ा मुलायम दिल है। देखो न तुमको कितनी होशियारी से पकड़ा गया है, कहीं कोई चोट नहीं लगने न दी, घाव न लगने न दिया।"

इस राक्षस का जवाब कैसे दिया जाय, केशव और जयमल नहीं सोच पाये। यदि कभी मौका मिला, तो उसे खड़े-खड़े मार देने का निश्चय किया। मोटा सरदार अपने नौकरों को डरा धमका कर चला गया। एक घंटा जंगल में चलने के बाद सब बड़े-बड़े डेरों के पास पहुँचे।

"इन दोनों को तने से बाँध दो। उसके बाद, तुम में से दो जाकर यह मालूम करो कि उन तीनों का जो भाग गये थे,

क्या हुआ था, उनका भी पता लगाओ। जो उनका पीछा कर रहे थे।" मोटे सरदार ने कहा।

केशव और जयमल्ल के पैरों को तने के खोल में रखकर उसने इधर उधर के पेड़ों में लकड़ी की कीलें गाड़कर, बाँध दिया। उनके गलों में लोहे की पट्टियाँ बाँध दीं। उनसे एक जंजीर लगा दी। उनके दोनों तरफ कुछ और लोग उसी तरह बन्धे थे।

"अरे, हम पर भी कितनी भारी आपत्ति आई है। केशव हमारी जिन्दगी तो जानवरों की जिन्दगी से भी बदतर है।" जयमल्ल ने दुखित हो कहा।

"घबराओ मत मल्ल, हमें जरूर इन दुष्टों के हाथ से निकल भागने का मौका मिलेगा। मैं अपने पिता के बारे में चिन्तित हूँ।" केशव ने कहा।

दिन में अन्धेरा होने से पहिले वह मोटा सरदार, केशव और जयमल्ल के पास चार पाँच बार आया। उसने उनके योग क्षेम के बारे में इस तरह पूछा, जिस तरह कोई पिता अपने पुत्र से भी क्या पूछेगा! उसने नौकरों से उनको अच्छा खाना दिलवाया।

"इन दोनों को इस तरह देखो, जैसे ये हमारे ही बच्चे हों। ये चार आदमी के बराबर हैं। चार मर भी गये हैं और ये दो जैसे भी हों, मुझे कोई नुकसान नहीं होगा। फिर भी वे फरार तीन दुष्ट, उनके पीछे गये सिपाही और उनको ढूँढने गये, ये बेवकूफ़ हम पर का हुआ क्या!" मोटा सरदार अपने नौकरों पर गरमाने लगा।

अन्धेरा होने के कुछ देर बाद मोटे सरदार के दस नौकर कराहते कराहते पेड़ों के पास आये। ये दो ऐसे अपने साथियों

को, जिनकी हालत बहुत नाज़ुक थी वहाँ ढोकर लाये।

उनको आता देख मोटे सरदार ने एक हन्टर लिया और चिल्लाता गालियाँ उगलता, उनके पास आया। "ये तीनों कहाँ हैं! ये तीनों क्यों घायल हुए! जो गये थे, अभी सब वापिस नहीं आये हैं!" वह उन पर हन्टर बरसाने लगा।

नौकरों के प्राण हन्टर खा खाकर निकलने से लगे। वह रोया—"तीनों हम में से एक और को मारकर जंगल में भाग गये हैं। वह बूढ़ा आदमी नहीं है, सचमुच राक्षस है। क्या हुनर पाया है उसने तलवार चलाने में...."

"तुम सब गधों ने मिलकर मेरी लुटिया डुबांदी है। दो जमा और छः खर्च। अगर इन दोनों के लिए ढेर-सा सोना न मिला, तो—" वह हन्टर हवा में घुमाते चिल्लाने लगा।

उस दिन रात को केशव और जयमल सो न सके। उनके दोनों पैर जो बँधे हुए थे, ऐसा लगता था, जैसे झड़ गये हों। जंगल में शेर और जानवर गरज रहे थे। डर के मारे उन दोनों की बुरी हालत थी। यद्यपि वह स्वयं एक गुलामों के व्यापारी के हाथ पकड़ा गया था, पर उसे यह जान खुशी हुई कि जंगल में उसका पिता कहीं सुरक्षित था।

सवेरा होते ही मोटा सरदार दो आदमियों को साथ लेकर, केशव, जयमल के पास आया। साथ के दोनों आदमियों ने अच्छे-अच्छे कपड़े पहिने हुए थे, कानों पर बड़ी-बड़ी बालियाँ थीं। वे बड़े व्यापारी जान पड़ते थे।

[अभी है]

आज्ञा का उ[illegible]

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा, वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा।

"राजा, तुम्हारी निष्ठा और दीक्षा को देखकर, तो मुझे लगता है, जैसे तुम अपने से बलवान किसी व्यक्ति की आज्ञा का पालन कर रहे हो। क्योंकि जो अपने से अधिक बलवान की आज्ञा का निराकरण करता है, कष्ट सहता है। राजा की आज्ञा का उल्लंघन करके यशवर्मा कहीं का भी न रहा। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिये यशवर्मा की कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

"यशवर्मा नामक क्षत्रिय युवक कलिंग देश का था। वह वंगदेश के राजा के

पास नौकरी के लिए गया। क्योंकि वंगदेश में, राजा के यहाँ, उसके देश का कोई न था, इसलिए वह अकेला अपना समय काट रहा था।

कुछ दिनों बाद वंगदेश और मगध देश में युद्ध हुआ। उस युद्ध में वंगदेश वासियों ने असाधारण पराक्रम दिखाया और मगधवालों को पूरी तरह हरा दिया। असाधारण पराक्रम दिखानेवालों में यशवर्मा भी था। उसके साथियों ने भी उसके साहस और पराक्रम की प्रशंसा की।

परन्तु राजा ने औरों को तो बहुत से ईनाम दिये, जागीरें दीं पर यशवर्मा को कुछ भी न दिया। वे लोग, जिन्होंने यशवर्मा से आधा पराक्रम भी न दिखाया था, राजा की खुशामद करके, नहीं तो सेनापति से सिफारिश करवाकर, बड़े बड़े ईनाम पाये थे। यशवर्मा किसी के पास भी न गया। राजा ने कोई ईनाम न दिया था, इसकी भी वह चिन्ता करता-सा न लगता था।

राजा, हर उत्सव के अवसर पर या जब कभी वह चाहता, अपने आश्रितों को ईनाम देता। उस समय भी उसने यशवर्मा को कानी कौड़ी न दी।

बहुत समय बीत गया परन्तु यशवर्मा की आर्थिक परिस्थिति न बदली। और तो और वह धीमे धीमे गरीब होता गया। इसका कारण यह था कि वह स्वभाव से दानी था। अगर कोई गरीबी के कारण कष्ट झेल रहा होता, तो वह देख न पाता। जो कोई माँगता, उसे न न कहता। इस तरह ही कितनों की गरीबी में मदद करके वह स्वयं गरीब हो गया था। उसके पास नये कपड़े न थे। जो कुछ अब थे, वे भी

एक एक करके चले गये। न नौकर ही रहे। आखिर उसकी स्थिति इतनी बिगड़ गई कि यशवर्मा अपने घोड़े के लिए दाना भी न खरीद सका। घोड़े को चराने के लिए, वह टहलने के बहाने नदी के किनारे जाता, वहाँ एक पेड़ के नीचे आराम करता और घोड़े को चरने छोड़ देता।

एक दिन शाम को, जब यशवर्मा, नदी के किनारे, पेड़ के नीचे, लेटा आराम कर रहा था, तो दो स्त्रियाँ उसकी जगह के पास आईं। "हमारी मालकिन आपसे बात करना चाहती हैं! क्या थोड़ी देर के लिए उस सामने वाले घर में आ सकियेगा?" उन्होंने पूछा।

यशवर्मा को उन्हें देख कर आश्चर्य हुआ। क्योंकि वे साधारण स्त्रियों की तरह न थीं। "जरूर आऊँगा। क्यों नहीं!" कहकर वह उनके साथ चला गया।

सामने के घर में एक और स्त्री थी। इतनी सुन्दर स्त्री की कभी यशवर्मा ने कल्पना भी न की थी।

उसने यशवर्मा को अपने पास बिठाकर कहा—"मैं एक गन्धर्व स्त्री हूँ। तुम

जैसे उत्तम पुरुषों से प्रेम करना हमारी परम्परा है। अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो मैं तुम्हारी पत्नी बनना चाहती हूँ।"

"देवी, चाहे, तुम भिखारिन भी हो, पर मैं तुमसे हृदयपूर्वक प्रेम करता हूँ।" यशवर्मा ने कहा।

फिर उस गन्धर्व स्त्री ने अपनी सहेलियों से उसके लिए स्वादिष्ट भोजन मंगवाया। उन दोनों ने भोजन किया। यशवर्मा ने स्वर्गिक सुखों का अनुभव किया।

यशवर्मा से उस गन्धर्व स्त्री ने कहा—"समय हो रहा है। अब तुम जाओ। यह थैली ले जाओ। इसमें से चाहे तुम कितना भी सोना लो, सोना आता रहेगा। जब तक यह तुम्हारे पास है, तुम्हारे पास गरीबी नहीं फटकेगी। जब कभी तुम मुझे देखना चाहो, तो मुझे यहाँ आकर बुलाओ, मैं एक क्षण में आ जाऊँगी। परन्तु एक बात याद रखो। मेरे बारे में भूल से भी किसी से न कहना। यदि किसी से कहा, तो मैं तुम्हें न मिलूँगी।"

तब से यशवर्मा का जीवन ही बदल गया। उसका घर, बड़ा-सा महल हो गया। उसके घोड़े की जीन सोने की हो गई। उसके कपड़े भी जरीदार थे। वह हमेशा दान करता रहता। जैसे उसने कभी दूसरों की गरीबी में हिस्सा बँटाया था, वैसे वह अब अपने सोने में औरों को हिस्सा दे रहा था। उसके साथियों को उसकी दशा बदलने पर सन्तोष हुआ।

जब कभी फुरसत मिलती, वह नदी के किनारे आता और अपनी पत्नी को बुलाता। वह तुरत आ जाती, वह कुछ समय, उसके पास आराम से काटता। फिर नगर वापिस चला आता।

इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। नव वर्ष आया। उस दिन, राजा अपने कर्मचारियों को बुलाकर दावत देता था। उस सहभोज में बहुत कुछ रौनक रहती।

सहभोज के बीच में राजा ने यकायक अपने दरबारियों से कहा—"मैं, यह कहता हूं कि रानी से कोई भी स्त्री अधिक सुन्दर नहीं है। मैं अभी उसे बुलाता हूं। यदि तुम में से किसी ने उससे अधिक सुन्दर स्त्री देखी हो, तो निरूपित करो।"

नौकरों ने राजा की पत्नी के पास जाकर राजा की बातें, जो उसने उसके सौन्दर्य के बारे में कही थीं, बताईं। उसको सहभोज के स्थल में ले गये। वह गर्व से उन्मत्त हो राजा के पास खड़ी हो गई।

"महारानी को ठीक तरह देखिए। इससे अधिक सुन्दर स्त्री को कहीं किसी ने देखा है!" राजा ने कहा।

वह सुन्दर अवश्य थी, पर उससे भी अधिक सुन्दर राजा के कई कर्मचारियों की पत्नियां थीं। सब ने उसको अच्छी तरह देखकर सिर हिलाकर कहा—"सच है, सच है।" केवल यशवर्मा ने ही उसकी ओर देखा तक नहीं। सिर नीचा करके वह मन ही मन हँसा। महारानी सबको गौर से देख रही थी। उसने राजा से कहा—"इस यशवर्मा ने मेरे सौन्दर्य का उपहास करके मेरा अपमान किया है। आप इसका प्रतीकार कीजिये।"

यह सुन राजा उबल पड़ा। उसने पूछा—"क्यों यशवर्मा, जब सब रानी के सौन्दर्य की प्रशंसा कर रहे हैं, तो तुम क्यों चुप हो! क्या कारण है!"

यशवर्मा ने खड़े होकर साहस करके कहा—"आपके लिए यह ठीक नहीं है कि महारानी को इतने आदमियों के समक्ष

बुलाकर उनको प्रदर्शित करें और उनकी प्रशंसा पाने का प्रयत्न करें। महारानी के सौन्दर्य के बारे में सन्देह करने की कोई ज़रूरत नहीं, पर उससे अधिक सुन्दरियाँ संसार में कितनी ही हैं।"

"उदाहरण के लिए किसी एक को तो दिखाओ।" राजा ने कहा।

"बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरी पत्नी, महारानी से अधिक सुन्दर है।" यशवर्मा ने कहा।

यह सुन सब बड़े चकित हुए। कोई नहीं जानता था कि उसकी पत्नी भी थी।

"अगर यह बात है तो उसको कहिये कि वह अपनी पत्नी को दरबार में उपस्थित करे। ये सब ही निर्णय करेंगे कि किसका सौन्दर्य अधिक है।" महारानी ने कहा।

राजा को यह बात जँची। "तो ऐसा ही करो। तुम अपनी पत्नी को लाओ। यदि लोग कहें कि वह ही अधिक सुन्दर है तो मैं तुम्हारी धृष्टता माफ़ कर दूँगा। नहीं तो महारानी का अपमान करने के अपराध में तुम्हें बुरी तरह सज़ा दूँगा।" उसने कहा।

यशवर्मा तुरत घोड़े पर सवार होकर नदी के किनारे गया। उसने अपनी पत्नी को बुलाया। उसने कई बार बुलाया, पर वह न आयी। उसने उसकी शर्त को तोड़ दिया था और दूसरों से उसके बारे में कह दिया था। उस स्त्री ने पहिले ही बताया था कि ऐसा करने से उनका दाम्पत्य तभी खतम हो जायेगा और वह यशवर्मा को नहीं दिखाई देगी।

यह जानते हुए भी कि राजा उसको दण्ड देगा, पत्नी के न मिलने पर हताश हो, दुखी हो वह वापिस आया। उसके हाव भाव को देखकर राजा ने पूछा—"कहाँ है, तुम्हारी पत्नी?"

"महाराज, मैं उसको नहीं ला सकता।" यशवर्मा ने कहा।

राजा ने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—"इस अधम को जिसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया, रानी का अपमान किया काली कोठरी में डाल दो।"

यशवर्मा ने काली कोठरी में अपनी पत्नी के वियोग, शोक में रो रोकर प्राण खो दिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह हो रहा है।

क्यों यशवर्मा ने ऐसा काम किया, जिससे वह राजा के क्रोध का और गन्धर्व स्त्री के क्रोध का भाजन हुआ। अगर वह सब की तरह रानी की प्रशंसा कर देता तो अच्छा होता न? उसने यदि ऐसा न किया तो क्या इसका कारण यह था कि वह राजा को कुछ न समझता था? या उसे इस बात का घमंड था कि उसकी स्त्री गन्धर्व थी, उसके पास मन चाहा सोना था? यदि तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"यशवर्मा यदि राजा को कुछ नहीं समझता होता, तो गन्धर्व स्त्री के बाद उसकी नौकरी ही छोड़ देता। यदि उसे गर्व होता कि उसकी स्त्री गन्धर्व थी उसके पास मन चाहा सोना था, तो ऐसा कोई काम न करता जिसके कारण उसे उन्हें खोना पड़ता। उसने औरों की तरह महारानी की इसलिए प्रशंसा नहीं की थी, क्योंकि वह औरों की तरह कपटी न था। वह जानता था कि जो कोई महारानी की प्रशंसा कर रहे थे, वह उसका अपमान कर रहे थे, उसने वैसा नहीं किया। क्योंकि वह स्वार्थी न था, इसलिए उसने कभी चिन्ता न की कि राजा ने उसे एक भी ईनाम नहीं दिया था। स्वार्थी नहीं था, इसलिए जब उसने अपने पत्नी के बारे में कहा था, तब वह न सोच सका कि ऐसा करने से उसकी कितनी हानि होने जा रही थी।"

इस प्रकार राजा का मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

एक गांव में यज्ञशर्मा नाम का एक ब्राह्मण था। वह बहुत से शास्त्र जानता था। बड़ा भलामानस था। वह कई घरों में पुरोहिती करता। सब उसका आदर करते। क्यों कि उसकी पत्नी न थी, बाल बच्चे न थे, इसलिए वह जो कुछ कमाता, दान धर्म आदि में खर्च कर देता।

यज्ञशर्मा के घर के सामने एक व्यापारी का घर था। उसका नाम नरसिंह था। वे यद्यपि दोनों बचपन से दोस्त थे, पर दोनों के स्वभाव और प्रवृत्तियों में बड़ा फर्क था। नरसिंह यदि किसी के पास कुछ होता तो डाह करता, अपने स्वार्थ के लिए चाहे कुछ भी हो, करता, यज्ञशर्मा ने बहुत चाहा कि उसकी बुद्धि बदल दे, पर उसे यह करने का मौका न मिला।

एक गांव में, एक धनी के बहुत दिनों बाद, एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के का नामकरण उत्सव बड़े ज़ोर शोर से मनाया गया। उस दिन यज्ञशर्मा ने पौरोहित्य किया। उस धनी ने रेशमी कपड़े ही न दिये, परन्तु एक हीरेवाली अंगूठी भी दी। हीरे की अंगूठी यज्ञशर्मा ने गांववालों को दिखाई। सब अंगूठी देखकर बड़े खुश हुए, पर नरसिंह उसे देखकर जला। वह उससे डाह करने लगा। उसे यह बुरा लगा कि मैं दिन रात मेहनत करके इतना कमाता हूँ पर यह अंगूठी मेरे पास नहीं है और इस मामूली पुरोहित के पास है।

नरसिंह ने बाहर कुछ भी न कहा हो, पर यज्ञशर्मा, अपनी सूक्ष्म बुद्धि से यह जान सकता था। नरसिंह देख ही रहा

था कि उसने अंगूठी एक पिटारी में रखी और पिटारी को एक ताक में रख दिया।

यह देख नरसिंह खुश हुआ कि उसकी इच्छा आधी पूरी हो गई थी। वह अपने घर चला गया।

आधी रात के समय यज्ञशर्मा के घर नरसिंह चोरी करने आया। अन्दर कैसे जाया जाय, वह सोचता, वह दरवाज़ा टटोल रहा था कि वह खुल गया। नरसिंह ने सोचा कि उसका काम बन गया था। पता लगा कि यज्ञशर्मा, खुर्राटे मारकर सो रहा था। नरसिंह धीमे धीमे कदम रखता ताक के पास गया। पिटारी लेकर उसका ढक्कन खोला। तुरत एक बिच्छू ने डंक मारा—"बापरे बाप, बिच्छू" वह चिल्लाया। तब तक यज्ञशर्मा, जो नीन्द का दिखावा कर रहा था, पलंग पर से उठ बैठा। "कौन है वह? क्या है?" चोर रँगे हाथ पकड़ा गया। "अरे, तुम हो, नरसिंह! रात के समय क्यों आये? क्यों नहीं मुझे उठाया? क्या बिच्छू ने काटा है? पिटारी क्यों खोली? सोते समय एक बिच्छू दिखाई दिया था, उसे पकड़कर मैंने पिटारी में रख दिया। ताकि सवेरा होने पर उसे दूर छोड़ आऊँ।" यज्ञशर्मा ने कहा।

नरसिंह मान गया कि वह अंगूठी चुराने के लिए आया था, जब से उसने अंगूठी देखी थी वह न सो पाया था, न कुछ खा ही पाया था।

"पागल कहीं के, मैं कोई पराया हूँ। अंगूठी ही अगर चाहिये थी, तो मुझ से माँग जो लेते।" यज्ञशर्मा ने कहा। नरसिंह यह सुन और शर्मिन्दा हुआ। इस घटना के बाद वह बिलकुल बदल गया।

विवाह दोष

मधु की माँ को यह जानकर बड़ा दुख हुआ कि जो विवाह इतनी मुश्किल से तय किया था, वह न हो सका। उसे लड़के पर गुस्सा भी आया। "तुम्हें हमेशा दूसरों की चिन्ता रहती है, कभी अपनी नहीं होती। इसलिए तुम्हें कोई लड़की नहीं देता। जब पैसा देकर एक लड़की को निश्चित किया, तो कहते हो कि उस लड़की ने किसी और से प्रेम किया था। लड़की तो खैर खोयी ही, साथ पैसा भी खो बैठे। क्या करूँ!" माँ ने कहा।

"माँ, क्या परोपकार से विवाह अधिक आवश्यक है? रोज़ हमारे गुरु कहा करते थे कि परोपकारार्थमिदं शरीरं। कहीं नहीं, कौन ऐसी स्त्री से सुख पायेगा, जिसे खरीदकर लाया गया हो? जो मेरे योग्य होगी, उसके साथ जैसे भी हो मैं विवाह कर लूँगा। तुम शोक न करो माँ।" गाँव से मधु निकल पड़ा। जहाँ कहीं उसे योग्य कन्या मिले उससे विवाह करने का उसका इरादा था।

दिन भर चलकर शाम को अन्धेरे के समय मधु एक गाँव में पहुँचा। उस दिन वहाँ हाट लगा था। उसे एक बूढ़ा दिखाई दिया, जिसने हाट में बहुत कुछ खरीद लिया था, पर जो वह उठा नहीं पा रहा था।

"यह गट्ठर मुझे दो। मैं तुम्हारे घर तक ले जाऊँगा।" मधु ने बूढ़े से कहा। क्योंकि वह बहुत भारी था, इसलिए बूढ़े ने उसको खुशी से उठाने दिया। जब दोनों

बूढ़े के घर पहुँचे, तब तक पूरी तरह अन्धेरा हो गया था।

"अच्छा, तो मैं अब जाता हूँ। अगला गाँव कितनी दूर है?" मधु ने पूछा।

"अगर कोई जरूरी काम न हो, तो आप हमारे घर ही रहो। सवेरे जा सकते हो।" बूढ़े ने कहा। मधु इसके लिए मान गया। वहाँ उसने खाना खाया और बाहर चबूतरे पर सो गया।
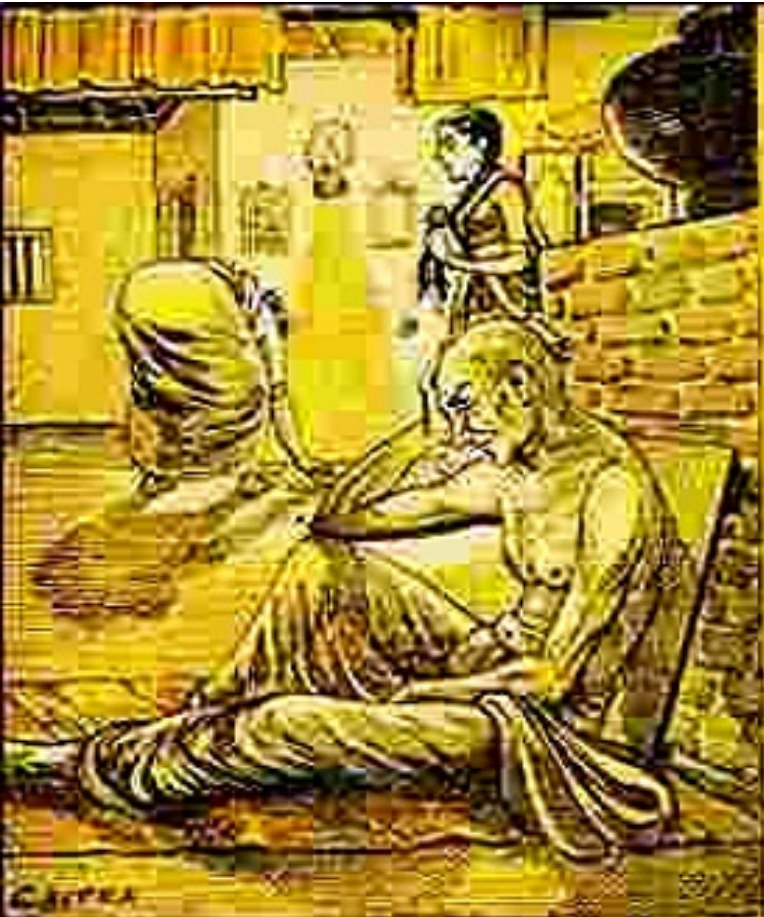
"उस बूढ़े के घर एक विधवा बहू और एक पोती थी, जिसका विवाह न हुआ था। पोती की उम्र सोलह साल थी। नाम था, मीनाक्षी। उस लड़की की यदि शादी नहीं हुई थी, तो इसका कारण था। जिस किसी ज्योतिषी ने उसकी जन्मपत्री देखी, उसने बताया कि वह विधवा बनेगी, जो कोई उससे शादी करेगा, वह मर जायेगा। यह बात आसपास के गाँववालों को भी मालूम हो गई। मीनाक्षी यद्यपि सुन्दर थी तो भी उससे किसी ने विवाह करने का साहस नहीं किया। यही नहीं, बूढ़े को भी जन्मपत्री में पूरा विश्वास था, इसलिए उसने भी उस लड़की के विवाह के लिए प्रयत्न न किया।"

ऐसी हालत में, राजा ने एक घोषणा की कि सोलह साल बाद किसी कन्या को अविवाहित न रखा जाये। यदि ऐसी कन्यायें रहीं हों, तो ग्रामाधिकारी उनका जबर्दस्ती विवाह कर सकते हैं।

ठीक उसी दिन मीनाक्षी की आयु सोलह वर्ष की हुई थी। यदि कल तक ग्रामाधिकारी के आने से पहिले उसका विवाह न कर दिया गया, तो वह उसका विवाह किसी ऐरे गैरे से कर देगा। कोई भी युवा उससे शादी करने का साहस कर सकता था।

बाहर मधु आराम से सो रहा था और अन्दर घर में ये तीनों यों माथापच्ची कर रहे थे। वे बहुत देर तक सोये नहीं। माँ और लड़की लगातार रोती रहीं। बूढ़ा भी उनको ढाढ़स न दे सका, वह भी खूब रोया।

"बहुत देर बाद जब वे सोये तो मीनाक्षी, धीमे धीमे उठकर बाहर गई। उसने सोचा कि यदि कुँयें में गिरकर आत्महत्या कर ली, तो कोई समस्या ही न रहेगी। मीनाक्षी का उठकर जाना, उसकी माँ ने देखा।" ज्योंही वह कुँयें में गिरनेवाली थी, त्यों ही उसने उसका हाथ पकड़कर कहा—"क्यों, बेटी, क्यों बिना साथ के कुँयें में गिरती हो? कूदना है, तो चलो दोनों कूदें।"

इन दोनों को रोना सुन, मधु उठकर बैठ गया। उसने कुँयें के पास दो स्त्रियों को कुँयें में कूदने के लिए होड़ करते देखा। वह जल्दी जल्दी उनके पास गया। "यदि कुँयें में ही कूदना है तो मैं कूदता हूँ। क्या कुँयें में कुछ गिर गिरा गया है?"

इतने में बूढ़ा भी बाहर उठकर आया। उसने मधु से अपनी समस्या के बारे में

सविस्तार कहा। "क्यों, बेटा, यह समस्या ऐसी नहीं, कोई सुलझाये, उलझाये।"

"इसमें तकलीफ ही क्या है? यदि जल्दी हो, तो मैं एक दिन और रह जाऊँगा। जब कल ग्रामाधिकारी आये तो कहना कि लड़की की शादी हो गई है। अगर वह पूछे कि लड़की का पति कहाँ है, तो मुझे दिखाना। इसके बाद, राजा की घोषणा, आप पर लागू नहीं होगी और मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।" मधु ने कहा।

"यदि झूठ कहेंगे कि शादी हो गई है, तो क्या ग्रामाधिकारी को विश्वास होगा? पुरोहित की गवाही चाहिये। पाँच दस को कहना होगा कि शादी हो गई है।" बूढ़े ने कहा।

मधु ने कुछ सोचकर कहा—"यही है, तो विवाह भी करवाइये, मैं शादी के लिए ही गाँव से निकला हूँ। इस तरह आपका काम और मेरा काम भी हो जायेगा।"

"लड़की की जन्मपत्री में खराबी है। जन्मपत्री में लिखा है कि जो कोई विवाह करेगा, वह तुरत मर जायेगा।" बूढ़े ने कहा।

मीनाक्षीने भी कहा—"नहीं, नहीं, मुझसे शादी करेंगे, तो ये भी मर जायेंगे।"

"परोपकार के लिए, मौका मिलना चाहिये। मैं मरने से डरनेवाला नहीं हूँ। हमारे गुरु ने कहा था कि जो परोपकार के लिए अपने प्राण तक दे देता है, वह और भी पुण्य पाता है।" मधु ने कहा।

जन्मपत्री की बात जानकर भी मधु विवाह के लिए तैयार था, इसलिए बूढ़े ने तुरत पुरोहित को बुलाया। ग्रामाधिकारी और पाँच दस को जमा किया और लड़की का उसके साथ विवाह कर दिया।

पुरोहित वही ज्योतिषी था, जिसने मीनाक्षी की जन्मपत्री देखी थी। यह देख कि मधु तुरत विवाह के बाद न मरा तो उसे कोई पानी भी नहीं देगा, उसने पानी में कुछ दवा मिलाकर, मधु को पिलाई। वह पीते ही मधु बेहोश गिर गया। स्त्रियों में तहलका मच गया।

"मैं पहिले ही जानता था, विधि को कौन रोक सकता है! हट्टा कट्टा लड़का था, फिज़ूल इसने आफ़त मोल ली।" पुरोहित ने कहा। किसी ने यह जानने की कोशिश न की कि मधु सचमुच मरा
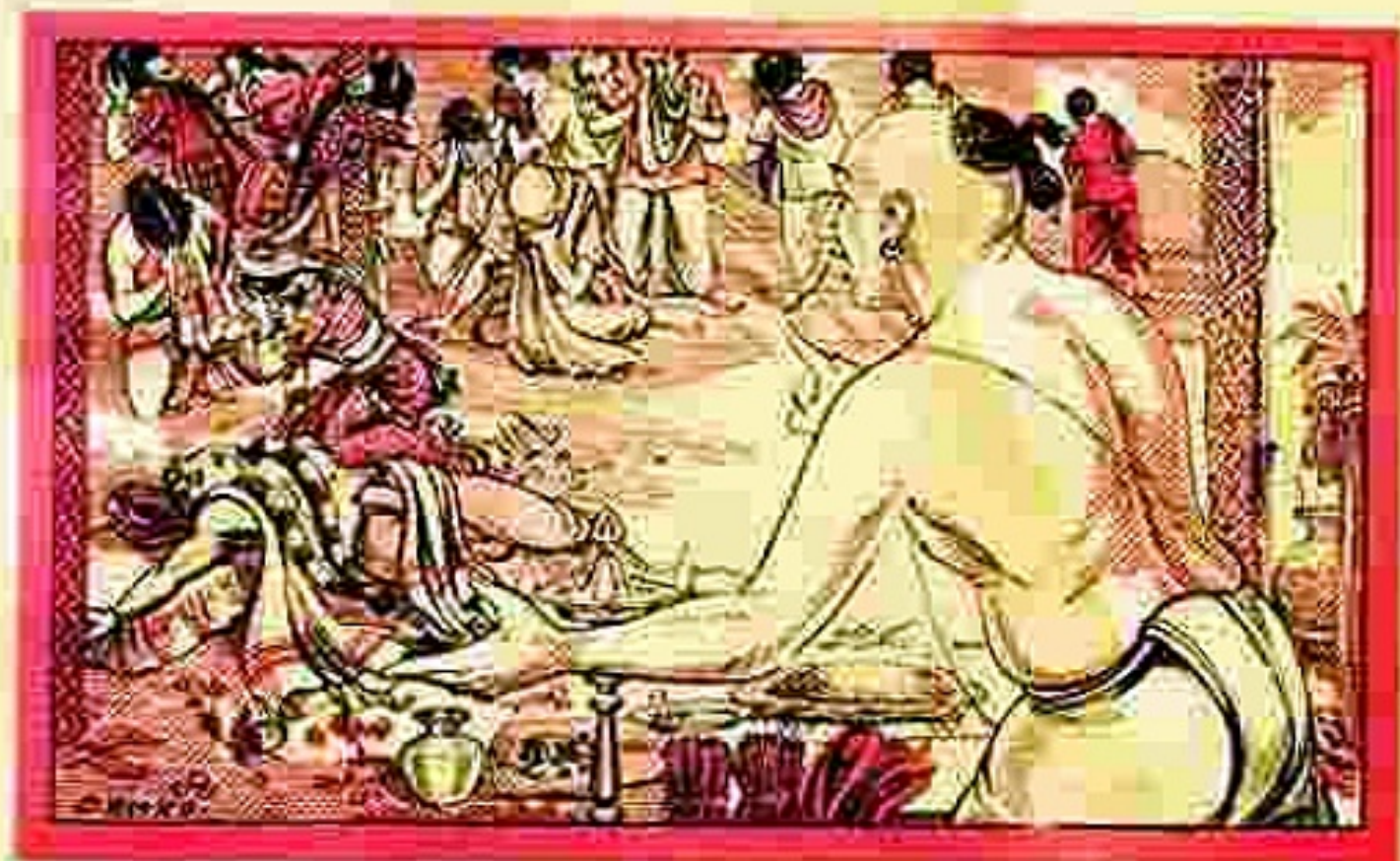
था कि नहीं। ज्योतिष में उसको इतना विश्वास था।

मधु को श्मशान ले जाने की तैयारियाँ होने लगीं। उसको नहलाया गया। उस समय मधु ने खाँस-खाँस कर उल्टी की और उठकर बैठ गया। "क्यों! क्या बात है!" उसका शरीर टूटा पड़ा था। पुरोहित ने जो दवा दी थी, उसने उस पर अधिक असर न किया।

पुरोहित, यह जानकर कि उस पर आस्था मानेवाली थी, वहाँ उपस्थित लोगों से कहने लगा—"बताता हूँ, आखिर हुआ क्या! मैं इसका मुँह देखते ही जान गया कि इसकी आयु बड़ी है। ताकि लड़की कि जन्मपत्री में जो आपत्ति लिखी है, वह न हो, मैंने एक दवा पानी में मिलाकर दी। आप पूछ सकते हैं कि मैंने यह बात आपसे पहिले क्यों नहीं कही? जब तक यह एक बार मर नहीं जाता और आप रोते-धोते न तो दुष्ट ग्रह का दोष न जाता। मैं अभी तक इसी आशा में था कि यह लड़का कब उठता है? अब उठ ही गया है, अब इसकी आयु में कोई कमी नहीं है।"

इन बातों पर सबने विश्वास किया। मधु ने ससुराल में तीन रातें बितायीं। फिर पत्नी के साथ घर गया, उसकी माँ भी खुश हुई कि बिना एक पाई खर्च किये वह एक सुन्दर पत्नी ले आया था।

मीनाक्षी भी उसको भगवान समझती, क्योंकि वह उसके उद्धार के लिए अपने प्राण तक देने को तैयार हो गया था। वे दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

(समाप्त)

सर्प-यज्ञ

धौम्य नाम के ऋषि के तीन शिष्य थे। उनकी भक्ति और श्रद्धा की परीक्षा करने के लिए गुरु, शिष्यों को तरह तरह से सताया करता।

निर्दय धौम्य के शिष्य के रूप में तरह तरह के काम करने के बाद वेद नामक व्यक्ति ने शिक्षा समाप्त करके, विवाह करके एक अपना आश्रम स्थापित किया और बहुत-से शिष्य जमा कर लिये। शायद इसलिए कि उसके गुरु ने उसे बहुत सताया था, वह अपने शिष्यों को कोई काम न देता। उनकी अच्छी तरह देखभाल करता, शास्त्र सिखाया करता।

वेद के शिष्यों में उदन्क नाम का एक था। उसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली। गुरु से विवाह की अनुमति लेकर उसने कहा—"अभी मुझे गुरु दक्षिणा देनी है, बताइये, क्या दूँ!"

"मुझे नहीं मालूम, मेरी पत्नी से पूछो कि वह क्या चाहती है!" वेद ने कहा।

गुरु पत्नी ने उदन्क से कहा—"मैं चार रोज़ में पुण्यक व्रत करने जा रही हूँ। पौष्य राजा की पत्नी के पास कुण्डल हैं। यदि तुमने उनको लाकर दिया, तो उन्हें पहिनकर व्रत करूँगी।"

उदन्क पौष्य के पास गया। उसने उससे कहा कि वह किस काम पर आया था। राजा ने उससे कहा—"मेरी पत्नी अन्तःपुर में है। उनसे माँगकर कुण्डल ले जा सकते हो।"

उदन्क ने पौष्य की पत्नी के पास जाकर अपनी गुरु दक्षिणा के बारे में कहा।

गुरु पत्नी के लिए उसने कुण्डल माँगे। उसने सन्तोष से कुण्डल देते हुए कहा—"इन कुण्डलों पर तक्षक की नज़र थी। कैसे तुम इनकी उससे रक्षा कर सकोगे?"

कुण्डलों को लेकर उदन्क ने पौष्य के पास आकर कहा—"राजन्, जिस काम पर मैं आया था, वह हो गया है।"

"अरे, तुम सा अतिथि आये और बिना भोजन किये कैसे जाने दूँ? मेरा आतिथ्य स्वीकार करो।" पौष्य ने कहा। उदन्क यह स्वीकार करके भोजन के लिए बैठ गया। चावल में एक बाल आया।

यह देख कि उसे अशुद्ध भोजन परोसा गया था उदन्क को पौष्य पर गुस्सा आ गया और उसने उसे शाप दिया कि वह अन्धा हो जाये। उस ब्राह्मण को निष्कारण शाप देता देख, राजा ने भी शाप दिया—"जाओ, तुम्हारे सन्तान न होगी।"

दोनों बड़ी जल्दबाजी में तैश में आ गये थे, सिर्फ इसलिए कि चावल में बाल आ गया था, उदन्क को राजा को शाप नहीं देना चाहिए था। दोनों पछताये। उदन्क ने तो अपना शाप वापिस ले लिया, राजा में वापिस लेने की शक्ति न थी।

उदन्क राजा से अभिशप्त होकर, कुण्डलों को लेकर, जंगल के रास्ते गुरु के आश्रम की ओर जा रहा था कि रास्ते में एक तालाब आया। आचमन करने के लिए उदन्क कुण्डल किनारे पर एक जगह रख, पानी के पास गया। उसके उधर जाते ही तक्षक पीछे पीछे आया और कुण्डल ले गया।

यह तक्षक दिगम्बर रूप में उदन्क के पीछे चला आ रहा था। तक्षक के कुण्डल लेते ही उदन्क भी भागा भागा आया, भागते हुए तक्षक को उसने पकड़ लिया।

परन्तु तक्षक इतने में साँप हो गया और वहाँ एक बिल में घुसकर नागलोक चला गया।

उदंक भी उस बिल में खोदता, पाताल के नागलोक में पहुँचा। वहाँ जो कोई नाग उसे दीखा, उसने उसको नमस्कार किया। परन्तु किसी ने भी उसको कुण्डल वापिस नहीं दिलवाये। उसने चारों ओर घूमकर देखा। उसे कुछ आश्चर्य दिखाई दिये। एक जगह दो स्त्रियाँ सफ़ेद सूतों और काले सूतों से कपड़े बुन रही थीं। एक और जगह छः बच्चे, बारह अरों का चक्र घुमा रहे थे। एक और जगह अच्छी नस्ल का घोड़ा खड़ा था। उसपर एक पुरुष था।

उदंक ने उस पुरुष के पास जाकर उसकी प्रशंसा की। उसने सन्तुष्ट होकर कहा—"माँगो, क्या चाहते हो?"

"मैं, सारे नागलोक को वश में करना चाहता हूँ।" उदंक ने कहा। वह पुरुष इसके लिए मान गया। उदंक के देखते देखते, उस घोड़े में से धुँआ और आग निकलने लगा।

सारे नागलोक में धुँआ फैल गया। तक्षक डर गया और उसने कुण्डल लाकर उदन्क को दे दिये।

उदन्क ने इस तरह कुण्डल तो ले लिये थे, पर समय से पहिले, कैसे उन्हें गुरु पत्नी के पास पहुँचाये, यह न समझ पाया। घोड़े पर सवार पुरुष ने उसकी दुविधा जानकर कहा—"इस घोड़े पर सवार हो जाओ, तुम समय से पहिले ही गुरु के घर पहुँच जाओगे।" घोड़े पर सवार हो, गुरु के घर जाकर, समय से पहिले ही गुरु पत्नी को उसने कुण्डल दे दिये। फिर उदन्क ने अपने गुरु से जो कुछ गुज़रा था, कहा। उसने नागलोक में जो दृश्य देखा था, उसका अर्थ पूछा।

"तुमने पाताल में जो स्त्रियाँ देखी थीं। वे धाता और विधाता थे। वे जो कपड़ा बुन रहे थे उनमें सफ़ेद धागे दिन और काले धागे रात हैं। तुम्हें जो छः बच्चे दिखाई दिये, वे छः ऋतुयें हैं। वे जो चक्र घुमा रहे हैं, वह वर्ष है। उसमें जो बारह अर हैं, वे बारह मास हैं। जो तुम्हें घोड़े पर आदमी दिखाई दिया था, वह पर्जन्य है। वह जिस घोड़े पर सवार था, वह अग्निदेव है।" वेद ने कहा।

उदन्क गुरु से विदा लेकर निकला। वह जब कभी तक्षक के बारे में सोचता, तो आग बबूला हो उठता। इसलिए वह सीधा हस्तिनापुर गया। वहाँ के राजा जन्मेजय से मिला। उसको आशीर्वाद देकर उसने कहा—"राजा यह क्या, तुम अपने मुख्य कार्य का बिना निर्वहण किये कब तक यों समय व्यर्थ करोगे?"

जन्मेजय ने चकित होकर कहा—"मुनीश्वर, मैं क्षत्रिय धर्म में अथवा राज्य धर्म में बिना गलती किये शासन कर रहा

हूँ। फिर भी यदि कोई गलती हुई हो, तो कहिये।"

उत्तंक ने, जनमेजय को अपनी सारी कहानी सुनाकर कहा—"मैं, जब गुरु पत्नी के लिए कुंडल ले आ रहा था, तो तक्षक ने मुझे बहुत तंग किया। आपके पिता को भी तो इसने ही डसा था, जब कश्यप नामक ब्राह्मण आपके पिता को सर्प के विष से मुक्त करने के लिए आ रहा था, तो तक्षक उसको रास्ते में मिला। इसी तक्षक ने ही तो उसको बहुत-सा धन घूँस देकर, वापिस भेज दिया था! उस तक्षक और नागकुल का संहार करने के लिए सर्प यज्ञ शुरु करो।"

जनमेजय को अपने पिता के देहान्त का वृत्तान्त नहीं मालूम था। उसने मन्त्रियों से पूछा—"यह सब कैसे हुआ था?" उन्होंने सारा वृत्तान्त सुनाया।

अर्जुन का लड़का, अभिमन्यु, महाभारत में, जब मर गया था, तब उसकी पत्नी उत्तरा गर्भवती थी। अश्वत्थामा ने जब ब्रह्मशिरोनामास्त्र छोड़ा, तो कृष्ण की दया से उत्तरा के गर्भ को कुछ न हुआ। उसने परीक्षित को जन्म दिया।

परीक्षित ने कृप के यहाँ अध्ययन किया। बड़ा हुआ। परीक्षित को शिकार का बड़ा शौक था। एक दिन उसने बहुत से पशु मार दिये। एक पशु को, जिसको उसने घायल कर दिया था, ढूंढता ढूंढता, वह वन में, ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ शमीक मुनि तपस्या कर रहे थे। उसने कहा—"मुनीश्वर, एक मृग मेरे से घायल होकर, इस तरफ़ भागा आया है। यदि आपको मालूम हो कि वह किधर गया है, तो ज़रा बताइये।"

क्योंकि शमीक ने मौन रख रखा था। इसलिए परीक्षित को उत्तर न दे सका।

परीक्षित को गुस्सा आ गया। वह पास पड़े मरे साँप को उसके गले में डालकर हस्तिनापुर वापिस आ गया। परन्तु परीक्षित शीघ्र ही पछताया कि उसने गलती की थी। क्योंकि मरे साँप को यद्यपि उसने उस मुनि के गले में डाल दिया था, तो भी वह उस पर क्रुद्ध न हुआ था।

शमीक महामुनि का, शृंगी नाम का एक लड़का था, जब वह गुरु के घर से अपने पिता के आश्रम की ओर आ रहा था, तो उसको कृश नाम का मित्र दिखाई दिया।

"क्या मेरे पिता कुशल हैं?" शृंगी ने पूछा।

"परीक्षित, तुम्हारे पिता के गले में मरा साँप डालकर चला गया है।" कहकर कृश हँसा।

शृंगी बड़ा गुसैल था। उसने शाप दिया—"जिस परीक्षित ने मेरे पिता का अपमान किया है, वह एक सप्ताह में, तक्षक के विष से मर जाये।"

फिर शृंगी पिता के पास गया। मरा साँप तब तक उनके गले में लटक रहा था। शमीक को यह भी न मालूम था। वह समाधि में था, शृंगी ने उसे निकाल फेंका। फिर उसने पिता को नमस्कार किया। तुरत शमीक ने आँखें खोलकर शृंगी को देखा। तब शृंगी ने जो कुछ हुआ था, पिता को बताया। उसने यह भी बताया कि परीक्षित को उसने शाप दे दिया था।

शमीक, उसे सुनकर, कुछ झुंझलाया, फिर कहा—"क्यों बेटा, क्यों जल्दी कर बैठे! क्या तुम उस राजा का अपकार कर सकते हो, जो धर्म के साथ शासन कर रहा हो! राजा है, इसलिए तो हम

निश्चिन्त हैं। हमारी तपस्या निर्विघ्न चल रही है। फिर परीक्षित युधिष्ठिर-सा है। बचपने के कारण तुमने शाप दे दिया है, यदि इसको वापिस ले सको, तो ले लो।"

शृंगी ने कहा कि वह वैसा कह न कर सकता था। तब शमीक ने अपने शिष्यों में से गौरमुख को बुलाकर कहा—"तुम परीक्षित के पास जाओ। उससे कुशल प्रश्न करो। सावधानी से उसको शाप के बारे में बताओ और कहो कि तक्षक से वह अपने को बचाने की कोशिश करे। यह कहकर चले आओ।" गौरमुख, सब बातें विनयपूर्वक परीक्षित से कहकर वापिस चला आया।

फिर परीक्षित के मन्त्रियों ने सोच विचार करके, एक खम्भेवाला महल बनवाया। उसमें हवा भी ठीक तरह न आ सकती थी। उसमें विष की औषधियाँ रखी गईं। विषवैद्य और मन्त्र वेत्ताओं को रखा गया। राजा, मन्त्री वहीं रहते।

छः दिन आराम से कट गये। जब से शृंगी ने शाप दिया था, तब से तक्षक परीक्षित को कैसे मारा जाये, इसी प्रतीक्षा में था। यह जानकर कि परीक्षित को, साँप के काटने से आपत्ति आ सकती थी, कश्यप नाम का ब्राह्मण राजा की साँप के विष से रक्षा करने के लिए हस्तिनापुर आ रहा था। यह बात तक्षक को मालूम हुई। वह ब्राह्मण रूप में, रास्ते में, तक्षक से मिला। "आप कौन हैं? कहाँ जा रहे हैं?" उसने तरह तरह के प्रश्न किये।

कश्यप ने जवाब दिया—"मैं, एक ऐसा मन्त्र जानता हूँ, जिससे मैं साँप के विष से मरे हुए लोगों को जीवित कर सकता हूँ और जो जल जलाकर राख हो गये हों, मैं उनको भी जिला सकता हूँ।

परीक्षित महाराजा को तक्षक मारने जा रहे हैं। मैं उनको जीवित करके, धर्म की रक्षा तो करूँगा ही, कीर्ति भी मिलेगी और धन भी प्राप्त करूँगा।"

तब तक्षक ने कश्यप से कहा—"मैं ही तक्षक हूँ। ऐसे लोग भी जिलाये जा सकते हैं, जिन पर बिजली गिरी हो, पर जिनको मैं काटता हूँ, उनको औषधी और मन्त्रों से जिलाना असम्भव है। इसलिए तुम जिस रास्ते आये हो, उसी रास्ते चले जाओ। तुम्हें मेरी बातों में विश्वास नहीं है। यह महावटवृक्ष है। यह वृक्ष, कितना बड़ा और ऊँचा है। यह पत्तों और फलों से लदा है। इसको मैं काटता हूँ। देखो, क्या होता है!" कहकर, उसने बड़ के पेड़ को काटा। तुरत इतना बड़ा पेड़ जलकर राख हो गया।

तब कश्यप ने उस राख को एक जगह इकट्ठा करके उसपर मन्त्र पढ़ा। तुरत वह बड़ का पेड़, पहिले की तरह खड़ा हो गया। तक्षक, कश्यप की मन्त्रशक्ति देखकर चकित हो गया। "महाराज, आपने मेरे

विष का तो मन्त्र से निवारण कर दिया, क्या आप उस मुनि के शाप को भी दूर कर सकेंगे? परीक्षित जितना धन तुम्हें देंगे, मैं उससे कहीं अधिक दूँगा। उसे लेकर तुम चले जाओ।"

कश्यप ने भी कुछ देर सोचा, फिर इस निर्णय पर आया कि परीक्षित की आयु समाप्त हो गई थी। उसने तक्षक से अनन्त धन लिया और वापिस चला गया।
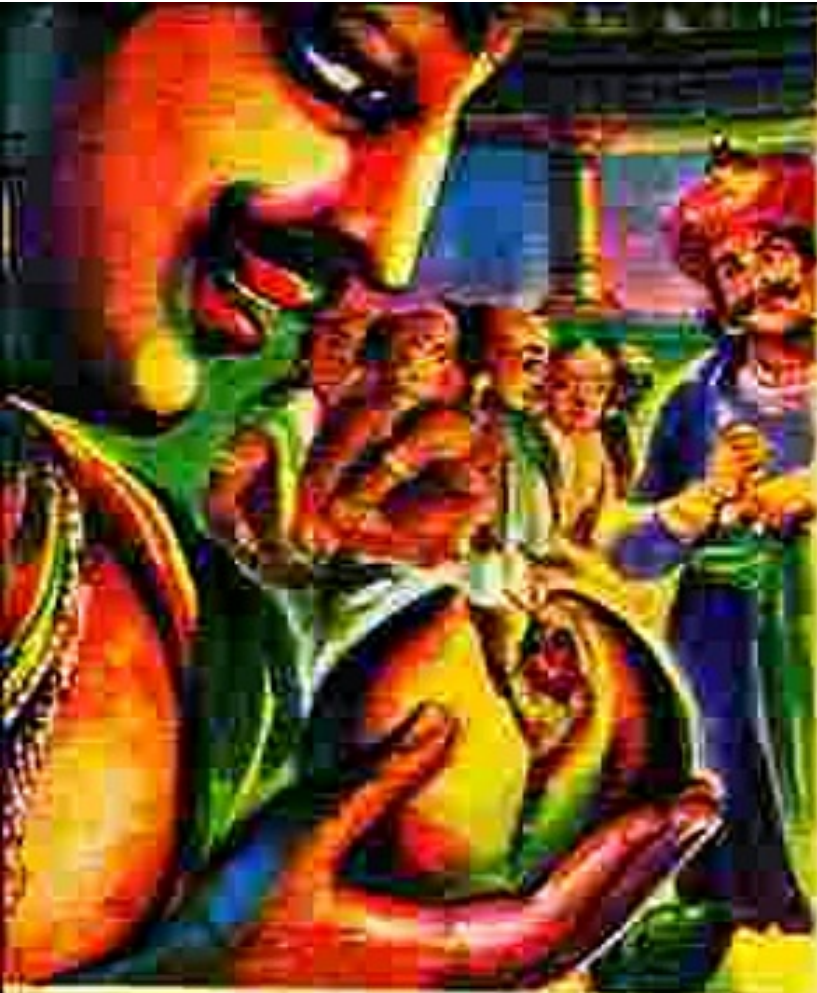
शायद यह बात किसी को पता भी न लगती। क्योंकि कश्यप और तक्षक में घने जंगल में, यूँ बातचीत हुई थी। पर संयोगवश एक ब्राह्मण, ईंधन के लिए, जंगल में गया। उस समय, बड़ के पेड़ पर से उसने, तक्षक और कश्यप का सम्भाषण सुना। जब तक्षक ने उसे काटा था, तो वह भी वृक्ष के साथ भस्म हो गया था। फिर जब कश्यप ने मन्त्र पढ़ा था, तो वह भी जीवित हो उठा था। फिर उसने, जंगल से आकर, यह बात सबको बता दी।

कश्यप के धन लेकर चले जाने के बाद, तक्षक, परीक्षित के पास आया और उसको काटने का उपाय सोचने लगा। उसने कामरूप नागों को बुलाकर कहा—"तुम सब मुनि कुमारों का वेष धारण कर, परीक्षित के महल के पास फल और फूल ले जाओ। मैं भी अदृश्य हो तुम्हारे साथ आऊँगा।"

नागों ने उसकी आज्ञा के अनुसार महल में सबको फल और फूल दिये। परीक्षित बड़ा खुश हुआ, उसने उन सब को पुरस्कार दिये। उनके लाये हुए फलों को, साथ के व्यक्तियों को देकर, उसने भी एक फल लिया, उसे तोड़ा, तो उसे, उसमें काली आँखें और लाल शरीरवाला एक छोटा-सा कीड़ा दिखाई दिया।

तक्षक को देखते ही, राज सेवक तितर बितर होकर, इधर उधर भाग गये। तक्षक के विष के कारण एक खम्भेवाला महल जलकर भस्म हो गया। मृत परीक्षित की अन्त्येष्टि क्रिया की गई।

जब परीक्षित मरा था, तब उसका लड़का, जन्मेजय छोटा था। पर मन्त्रियों ने उसका पट्टाभिषेक किया। स्वयं वे शासन करने लगे। फिर उन्होंने काशी राजा की लड़की वपुष्टा को लाकर, जन्मेजय के साथ उसका विवाह किया। जन्मेजय की कीर्ति धीमे धीमे सर्वत्र फैलने लगी।

परीक्षित ने उस कीड़े को सबको दिखाकर कहा—"मेरे शाप की अवधि समाप्त हो जायेगी। यदि इस कीड़े ने मुझे काटा, तो ब्राह्मण का शाप खतम हो जायेगा। मेरे लिए प्राण भय भी नहीं रहेगा। सोचकर उसने उस कीड़े को अपने गले पर लगा लिया। वहाँ जो लोग थे, उसे वैसा करने से न रोक सके।"

इतने में कीड़ा, तक्षक में बदल गया। उसने अपने शरीर से राजा को लपेट लिया और जोर से चिल्लाया। "मैं ही तक्षक हूँ।" वह उसे काटकर चला गया।

जन्मेजय के मन्त्रियों ने ये सब बातें बताकर कहा—"महाराज, तक्षक ने, जो आपके पिता के साथ बर्ताव किया था, उसके बारे में अच्छी तरह सोचकर, वैसा ही कीजिये, जैसे उदन्क महामुनि कहते हैं। तक्षक क्योंकि दुष्ट था, इसलिए उसने ब्राह्मण के शाप देने पर, आपके पिता के प्राण लिए।" जन्मेजय को बड़ा गुस्सा आया। उसने मन्त्रियों से कहा—"शाप तो तक्षक के लिए बहाना-सा था। वह तो मेरे पिता का अपकार ही करना चाहता था। इसलिए तो महामन्त्र वेत्ता, कश्यप को रास्ते

में रोककर उसे बहुत-सी घूँस देकर वापिस भेजा दिया था। मैं जरूर यज्ञ करके, तक्षक आदि सर्पों को यज्ञ में भस्म कर दूँगा। इससे उदन्क महामुनि को भी सन्तोष होगा।"

तब जन्मेजय ने राजपुरोहित और यज्ञ करनेवालों को बुलाकर कहा—"यह सर्प यज्ञ का अनुष्ठान कैसा है!"

उन्होंने कहा—"महाराज! इस सर्प यज्ञ की व्यवस्था आपके लिए की गई है। उसको करने की योग्यता, केवल आप में ही है। इसे और कोई न करेगा।"

"तो यज्ञ के लिए आवश्यक व्यवस्था कीजिये।" जन्मेजय ने आज्ञा दी। उसके लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित की जा रही थी। ब्राह्मण यज्ञ के लिए यज्ञशाला का निर्माण कर रहे थे।

जन्मेजय के पास लोहिताक्ष था, जो सूतकुल का था। वह बड़ा शिल्पशास्त्र वेत्ता और वास्तुशास्त्र का निपुण था और कई पुराणों का ज्ञाता था। उसने जन्मेजय से कहा—"यह यज्ञ पूरा न होगा, इसमें एक ब्राह्मण विघ्न पहुँचायेगा।"

यह सुनते ही जन्मेजय क्रुद्ध हो उठा। उसने आज्ञा दी कि लोहिताक्ष को यज्ञशाला में न आने दिया जाय। फिर जन्मेजय और वपुष्टा देवी ने यज्ञ की दीक्षा लेकर, यज्ञशाला में प्रवेश किया।

सर्प यज्ञ प्रारम्भ हुआ। चण्डभार्गव, पिंगल, कौत्सु, व्यास, वैशम्पायन, जैमिनि, उद्दालक आदि अनेक महामुनि यज्ञशाला में थे। नील वस्त्रों को पहिने ऋत्विज, एक एक मन्त्र पढ़ते जाते और एक एक साँप अग्नि में गिरता जाता।

सर्पों में बहुत से वंशों से सम्बन्धित सर्प थे, वासुकीय, तक्षक वंश के ऐरावत, कौरव्य, धृतराष्ट्र के कुल के हजारों, लाखों

सर्पों उनके नाम से बुलाया गया और मन्त्र शक्ति के कारण अग्निहोत्र में बलि होने लगे। यज्ञशाला भयंकर और वीभत्सपूर्ण हो उठी।

तक्षक डरकर, इन्द्र के पास भागा भागा गया। "इस सर्प यज्ञ में, तुम जैसे बड़े बड़े साँपों को खतरा है, यह ब्रमा पहिले ही कह चुका है। इसलिए तुम घबराओ मत।" कहकर, इन्द्र ने तक्षक को अपने ही पास रख लिया।

वासुकी भी बड़े साँपों में था। सर्प यज्ञ को रोकने के लिए वासुकी अपनी बहिन जरत्कार के पास गया।

उसके इस प्रकार जाने में एक कारण था। साँपों को यज्ञ में नष्ट हो जाने का शाप, साँपों की माँ कद्रुव ने दिया था। उसने अपनी सौत से इधर-उधर की बाजी लगाई। बाजी जीतने के लिए, उसने अपने लड़कों से ऊँटपटाँग काम करने के लिए कहा। उन्होंने वैसा करने से इनकार कर दिया। इसलिए उसने उनको शाप दिया।

उस समय उसकी गोदी में एलापुत्र था। ब्रमा और देवताओं में, जो सर्प यज्ञ के बारे में बातचीत हुई थी, उसने सुनी। देवताओं से ब्रमा ने कहा था—"सर्प यज्ञ तो होगा, पर उसके पूर्ण होने से पहिले जरत्कार के पैदा होनेवाला लड़का, उसे रोक देगा।" यह एलापुत्र ने सुनकर वासुकी को बताया। तब से वासुकी अपनी बहिन जरत्कार के विवाह की प्रतीक्षा करने लगा।

जरत्कार नाम के ब्रामण ने ब्रमचर्य व्रत लेकर, तपस्या करते एक दिन, एक टहनी से पैरों के बल लटके हुए ब्रामणों को देखकर पूछा—"आप सब कौन हैं?"

इस पर उन्होंने कहा—"हम जरत्कार के पूर्वज हैं। जरत्कार के ब्रमचर्य व्रत के

अवलम्बन के कारण, सन्तान हीन होने के कारण, हम उत्तम लोक नहीं पहुँच पाये हैं। यह सुन जरत्कार बड़ा चिन्तित हुआ। उसने निश्चय किया कि यदि उसी के नाम की कन्या मिली, तो वह विवाह कर लेगा। वह वासुकी बहिन के बारे में सुनकर आया और उससे उसने विवाह कर लिया। उन दोनों का आस्तिक नाम का लड़का हुआ। क्योंकि वह आस्तिक ही सर्प यज्ञ रोक सकता था इसलिए वासुकी अपनी बहिन की शरण में आया था।

जरत्कार ने अपने छोटे लड़के आस्तिक को बुलाकर कहा—"बेटा, तुम तपस्वी हो। तुम्हारे मामा सर्प, जन्मेजय के सर्प यज्ञ में बलि हो रहे हैं। इस वंश के क्षय को तुम रोक सकोगे, यह सोचकर, मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से विवाह किया था। इसलिए तुम तुरत जन्मेजय की यज्ञशाला में जाकर, सर्प मरण होम को रोक दो। ब्रह्मा ने कहा है कि यह तुम ही कर सकोगे।"

आस्तिक माता की आज्ञा पर जन्मेजय की यज्ञशाला में गया। जन्मेजय और वहाँ उपस्थित महर्षियों की उसने प्रशंसा की। जन्मेजय ने आशीर्वाद दिया। आयु में छोटा था। अच्छा रूप था। तेजस्वी था। उसकी मधुर वाक्शक्ति देखकर, वह वहाँ उपस्थित लोगों की प्रशंसा का पात्र बनगया। जन्मेजय ने उस युवक से कहा—"तुम्हारे आने से यज्ञशाला में रौनक आ गई है। तुम क्या वर चाहते हो, बताओ।" कहकर, उसने ऋत्विजों की ओर मुड़कर कहा—"इतने सर्प होम में भस्म हो गये हैं, पर तक्षक अभी तक क्यों नहीं बलि हुआ?"

"राजन्, तक्षक इन लोकों में कहीं नहीं है। देवेन्द्र की शरण में चला गया है।" उन्होंने जवाब दिया।

"तो इन्द्र को भी तक्षक के साथ मन्त्रशक्ति द्वारा बुलाओ।" जनमेजय ने कहा। उनके मन्त्र पढ़ते ही इन्द्र और उत्तरीय को लपेटे लपेटे तक्षक भी अग्निहोत्र की ओर आने लगा। तब इन्द्र तक्षक को अपने बस से हटाकर, स्वयं चला गया। तक्षक छटपटाता अग्नि की ओर आने लगा।

"महाराज! आपने कहा था कि जो मांगूंगा, वे देंगे। आप इस सर्प यज्ञ को तुरत रोक दीजिये। यही मेरी इच्छा है। ये सर्प मेरी माँ की तरफ से मेरे बन्धु हैं।" कहकर आस्तिक ने तक्षक को अग्निहोत्र में पड़ने से अपने तपस्या के कारण रोक दिया।

सर्प यज्ञ समाप्त हो गया। लोहिताक्ष ने जो कहा था, वह बिल्कुल ठीक निकला। जनमेजय ने लोहिताक्ष को उचित धन आदि दिया। यज्ञ में जिन सदस्यों ने भाग लिया था, उनको भरपूर दक्षिणा दी। यागदीक्षा को समाप्त करने के लिए उन्होंने आवश्यक स्नान वगैरह किये।

फिर जनमेजय ने आस्तिक से कहा—"क्या अब आप सन्तुष्ट हैं। मैं अश्वमेध यज्ञ करने जा रहा हूँ। आप उसमें अवश्य आना।" अच्छी तरह सम्मान करके उसको भेज दिया।

वासुकी आदि ने आस्तिक की, जिसने उनके वंश निर्मूलन को रोक दिया था, खूब प्रशंसा की। वासुकी आदि ने उसे वर भी दिया कि उसका नाम याद करते ही ऐसे साँप भी, जो हटाये न हटते हों, सिर टूटकर मर जायेंगे।

गुलाम लड़की

खुरासान देश में एक करोड़पति व्यापारी था। उस व्यापारी के एक सुन्दर लड़का था। उसका नाम था अलीशार। वह करोड़पति बीमार पड़ा, उसने सोचा कि वह मरने जा रहा था, इसलिए उसने अपने लड़के को बुलाकर कहा—"बेटा, मैं आँखें मूँदने से पहिले तुम्हें दो तीन बातें बताना चाहता हूँ। संसार बड़ा भयंकर है, उससे ज्यादह सम्पर्क न रखो! इससे बहुत-से कष्ट आ सकते हैं। जब तक तुम में शक्ति है, तुम दूसरों का उपकार करो, पर प्रतिफल की अपेक्षा न करो। एक बात और याद रखो। सचमुच कहा जाये, तो दूसरों का उपकार करने के बहुत-से मौके नहीं आते। जो कुछ धन तुम्हारे पास है, उसका दुर्व्यय न करो। यह संसार तुम्हें तुम्हारे धन से ही तोलेगा। एक और बात, पीना बहुत बुरा है। वह मनुष्य को गिरा देती है।"

जब अलीशार ने कहा कि वह उन बातों का अनुसरण करेगा। उस व्यापारी ने निश्चिन्त हो आँखें मून्द लीं।

पिता के मरने के बाद अलीशार एक वर्ष तक तो उनके हितोपदेशों को कार्यान्वित करता रहा। फिर वह दुस्संगति में आ गया। नीच, दुष्ट, बेकार लोग उसके दोस्त हो गये और उसको गलत रास्ते पर चलाने लगे। गलत रास्ते पर वह क्या गया कि अलीशार व्यापार, घर, वगैरह सब कुछ खो बैठा। तब जाकर उसने आँखें खोलीं। मगर तब तक उसके

रामबरण

पास सिवाय बदन के कपड़ों के कुछ नहीं रह गया था। उसके अमीर दोस्तों ने उससे किनारा कर लिया। तब उसे पिता के उपदेश और भी याद आये। रहने के लिए घर न था। अलीशार एक छोटे से झोंपड़े में रहता और घर घर माँग मूँग कर पेट भर लेता। वह भीख माँगता माँगता हाट की ओर जा रहा था कि उसे भीड़ दिखाई दी। यह देखने के लिए कि वहाँ क्या हो रहा था, वह पास गया। उस भीड़ के बीच में एक सुन्दर गुलाम लड़की को नीलाम किया जा रहा था। अलीशार उसके सौन्दर्य को देखकर स्तब्ध-सा रह गया। अपनी दुस्थिति ही भूल गया। प्रतिमा की तरह खड़ा हो गया।

गुलाम को ज़ोर ज़ोर से चिल्लाकर नीलाम किया जा रहा था—"महाशयो, व्यापारियो, धनियो, इस लड़की को देखिये। सौन्दर्य ऐसा कि चान्द भी शरमाये। इसके लिए क्या देंगे?"

किसी ने कहा पाँच सौ दीनारें, रशीद अल्दीन नामक एक बूढ़े ने कहा छः सौ दीनारें। किसी और ने कुछ और बढ़ा कर कहा। तब बूढ़े ने कहा एक हज़ार। इसके बाद किसी ने कुछ नहीं कहा। तब नीलाम करनेवाले ने गुलाम के मालिक की ओर मुड़कर कहा—"क्या, हज़ार दीनारों पर दे दूँ।"

गुलाम के मालिक ने कहा—"मुझे कोई एतराज नहीं है। मैंने वचन दिया है कि मैं तुम्हें उसी को ही बेचूँगा, जिसे तुम चाहोगी। इसलिए तुम उनकी अनुमति लो।"

तब नीलाम करनेवाले ने गुलाम लड़की की ओर मुड़कर कहा—"क्यों सुन्दरी! क्या तुम इस योग्य बूढ़े रशीद अल्दीन को बिकोगी?" जमरुद मान गई।

अब नीलाम करनेवाले ने कहा कि क्या कोई और है, जो इस दाम पर इस लड़की को खरीदना चाहता है? तो दो तीन आदमी और आगे बढ़े। एक रशीद जितना बूढ़ा तो नहीं था, पर उसने अपने बालों पर खिज़ाब लगा रखा था। इसलिए उसकी उम्र इतनी न लगती थी। एक और की एक आँख न थी। एक की दाढ़ी नाभी तक लटक रही थी।

अमन्द ने सबका मज़ाक किया और कहा कि वह किसी को नहीं चाहती थी। वह एक एक का मुँह देखती गई। अलीशार को देखते ही, वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गयी। उसने नीलाम करनेवाले को अंगुली उठाकर बताया...."मैं उसको बिकूँगी।" कहकर वह पुरुषों के सौन्दर्य पर किसी का लिखा गीत गाने लगी। नीलाम करनेवाले ने उस गुलाम स्त्री के मालिक से कहा—"न जाने, इस लड़की को क्या समझा था, यह तो बड़ी तेज़ है।"

"और इतने में ही तुम अचरज कर रहे हो। ऐसी कोई विद्या नहीं है, जो यह नहीं जानती है। वह बहुत अच्छी तरह काशीदा करती है। पचास दीनारों

की कीमत के परदे, और कालीन हफ्ताह भर में बना देती है। जो कुछ भी दाम, जो कोई भी देगा, वह जल्दी ही बना लेगा।" जमुरुद को बेचनेवाले ने कहा।

नीलाम करनेवाले ने हाथ उठाकर कहा—"जो इस गुलाम को खरीदेगा। किस्मत है, तो उसकी है।" उसने अलीशार से कहा—"यह रत्न" आपको सौगुना कम मूल्य पर मिल सकेगी।

अलीशार ने सिर झुकाकर, यह सोचकर कि विधि उसका किस प्रकार उपहास कर रहा था, कहा—"उस आदमी की भी भला क्या हस्ती इन व्यापारियों में जिसका कोई पता ठिकाना नहीं रहा।"

जमरुद ने उसकी ओर फिर उत्साह से देखा, पर उसने चूँकि सिर नीचा किया हुआ था, इसलिए वह उसका मुँह न देख सका, तब उसने नीलाम करनेवाले से कहा—"तो तुम मुझे उसके पास ले जाओ। मैंने निश्चय कर लिया है कि वही मेरा खरीददार है।"

वह नीलाम करनेवाले के साथ उसके पास गई। "आपने मेरे हृदय में प्रकाश कर दिया है। क्यों नहीं मुझ से दाम बताते! यदि आप सोचते हो कि मेरे दाम कुछ अधिक हैं, तो आप अधिक बताइये। नहीं, तो कम बताइये।" वह उसके सामने गिड़गिड़ाई।

अलीशार ने लाचार हो सिर एक तरफ कर लिया। "न मुझ पर खरीदने की जिम्मेवारी है, न तुम पर बिकने की ही।" तब जमरुद ने उत्कंठापूर्वक कहा—"मैं सोचती हूँ कि हज़ार दीनारें मेरे लिए अधिक हैं, तो नौ सौ बताइये। नहीं तो, आठ सौ, नहीं तो, सात सौ, नहीं तो, छः सौ, छः भी नहीं, तो एक सौ ही कहिये।"

तब तक अलीशार सिर हिलाता आ रहा था। आखिर उसने कहा—"उतनी रकम भी मेरे पास नहीं है।"

जमरूद ने खुश होकर पूछा—"तब कितना है? बाकी घर जाकर भेज देना?"

"अरे पगली कहीं की, मेरे पास सौ दीनारें तो क्या एक दीनार भी नहीं है। सोने का सिका तो क्या, मेरे पास ताम्बे का सिका भी नहीं है। क्यों मेरे लिये वक्त बरबाद करती हो? किसी और खरीददार को ढूँढ़ लो।" अलीशार ने कहा।

जमरूद ने उससे कहा—"खैर, जाने दो, मुझे खरीद लो। मेरे हाथ पर हाथ रखकर, अपना कपड़ा मुझ पर ओढ़कर, मेरी कमर में अगर हाथ डाल लिया, तो यह इसकी निशानी है कि मैं बिक गई हूँ।"

अलीशार ने वैसा ही किया, जैसा कि उसने कहा था। जब उसने उसकी कमर में हाथ डाला, तो उसने चुपचाप उसके हाथ में एक थैली खिसकादी। "इसमें हज़ार दीनारें है, नौ सौ मेरे मालिक को दे दीजिये। सौ हम दोनों के खर्च के लिए रख लीजिये।"

अलीशार ने थैली में से नौ सौ, जमरूद को बेचनेवाले को दिये, फिर उसको अपनी जगह पर ले गया। जमरूद ने पहिले ही अनुमान कर लिया था कि उसकी जगह बहुत छोटी होगी। घर आते ही उसने एक और थैली अलीशार के हाथ में रखते हुए कहा—"घर के लिए ज़रूरी चीज़ें, कालीन वगैरह फिर बड़ा-सा रेशम का कपड़ा, जरी, चान्दी का तागा, सात रंगों के तागे, और एक बड़ी सूई खरीद लाइये। खाने पीने की चीज़ें भी लाइए।"

अलीशार, बाज़ार जाकर जो कुछ उसने माँगा था, वह सब ले आया। जमरूद ने घर को खूब सजाया। रोशनी की। दोनों ने बैठकर आराम से भोजन किया। इस प्रकार उनका घरबार चल पड़ा।

जमरूद परदे, कालीन आदि बनाने में बहुत चतुर थी। उसने एक क्षण भी आराम न किया और एक सुन्दर परदा बना दिया। रंग बिरंगे धागों से, उसने परदों पर तरह तरह के जन्तु, पक्षी और वृक्ष के चित्र काढ़े। इस परदे को बनाने के लिए एक सप्ताह लगा। उसके पूरे होते ही, उसकी तह बनाकर, अलीशार के हाथ में देते हुए उसने कहा—"इसे किसी भी दुकान में, पचास दीनारों से कम न बेचना। भाव ताव उससे ही कीजिए, जिसे आप जानते हो, अनजाने से आप सौदा नहीं कीजिए। ऐसा करने से हम पर आपत्ति आ सकती है।"

अलीशार इसके लिए मान गया। उसके बनाये हुए परदे को, उसने एक परिचित दुकानदार को पचास दीनार लेकर बेच दिया।

जमरूद ने फिर उससे रेशम की चादर, धागे आदि मँगाये। एक और हफ्ता मेहनत करके, उसने एक और परदा तैयार किया। उसको भी अलीशार ने एक परिचित की दुकान पर, पचास दीनारों पर बेच दिया।

इस प्रकार वे बिना किसी कमी के आराम से जीने लगे। जैसे जैसे दिन बीतते गये, उनका प्रेम भी बढ़ता गया।

मगर....एक दिन....। (अभी है)

भगवान का वर

"बगल के घर के मामा मामी, हल्दीवाले कपड़े पहनकर तिरुपति जा रहे हैं।" बच्चों ने बाबा से कहा।

"हाँ, शायद उनकी कोई मनौती होगी।" बाबा ने कहा।

"मनौती क्यों करते हैं?" बच्चों ने पूछा।

"जैसे किसी को पैसे की चाह है, किसी को नौकरी की, किसी को यह चाह है कि बीमारी ठीक हो जाये। निस्सन्तान की यह भी चाह हो सकती है कि उसके सन्तान हो।" बाबा ने कहा

"क्या मनौती करने से भगवान पैसे दे देते हैं?" बच्चों ने कहा। "हाँ देते हैं। इसलिए ही तो लोग मनौती करते हैं।" बाबा ने कहा।

"तो क्या भगवान के पास पैसे हैं?" बच्चों ने इस प्रकार पूछा, जैसे उन्हें सन्देह हो रहा हो। "क्या भगवान के पास पैसे होते हैं? पागलो।" बाबा ने पूछा।

"फिर भगवान उनको पैसे कैसे देते हैं—बाबा?" एक लड़के ने पूछा।

"अगर यह जानना चाहते हो कि कैसे देते हैं, तो एक कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" कहकर बाबा ने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक गाँव में एक शिवालय था। अन्दर मन्दिर में शिव लिंग था और बाहर नन्दी की मूर्ति। एक तरफ पार्वती की मूर्ति और दूसरी तरफ विनायक की मूर्ति थी। रोज विनयपूर्वक वहाँ जानेवाले दो व्यक्ति

थे....एक था गाँव का सबसे बड़ा धनी लखपति और दूसरा सबसे अधिक गरीब मजदूर।

एक दिन लखपति कुछ देरी से आया। वह अन्दर पैर रख रहा था कि अन्दर से किसी का बात करना सुनाई दिया।

"क्यों, यह मजदूर कई सालों से पूजा कर रहा है। आप उसकी गरीबी क्यों नहीं हटाते?" यह प्रश्न स्त्री स्वर में था।

"हाँ, पार्वती, तो ऐसा ही करूँगा। विघ्नेश्वर, देखो कल शाम तक कोई ऐसा उपाय करो कि यह गरीब लाख रुपये कमाले।" पुरुष स्वर ने कहा। "अच्छा" एक युवक स्वर सुनाई दिया।

लखपति को यह सोच अचरज हुआ कि इस तरह बातचीत करनेवाले शिव, पार्वती और विनायक ही होंगे। और जब उसने मन्दिर में घुसकर यह पाया कि वहाँ कोई न था, तो उसका अनुमान पक्का हो गया।

"जिसको मुट्ठी भर चावल नसीब नहीं उसे लाख रुपया! वह तो यह भी नहीं जानता था कि उस लाख रुपये का क्या किया जाय? उसके सुख-सन्तोष के लिए सौ रुपये काफ़ी हैं। अधिक से अधिक हज़ार।" लखपति ने सोचा।

यह सोच भगवान को नमस्कार करके वह घर चला गया। उसे रात भर नीन्द न आयी। यदि विनायक ने उस मज़दूर को लाख रुपये दिये तो वह आफ़त में फँस जायेगा। इसलिए उसने उसको उस आफ़त से बचाने का निर्णय किया।

तो उसने क्या किया? वह सवेरे ही उस मज़दूर को खोजता खोजता निकला और जैसे भी हो उसे पकड़ लिया। पकड़कर उसने उससे कहा—"आज जो कुछ तुम्हें पैसा मिले मुझे दे देना। मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा।"

मज़दूर ने चकित होकर कहा—"आप शायद मेरी मज़ाक कर रहे हैं।" लखपति ने कहा कि मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। मज़दूर ने विश्वास नहीं किया।

"देख, सौ रुपये नहीं हज़ार रुपये दूँगा। पर जो कुछ तुम्हें आज मिले, ज़रूर मुझे दे दो। तुम्हारी गरीबी यों आज हट जायेगी।" लखपति ने कहा।

मज़दूर को गुस्सा आ गया। "आप अपना रुपया अपने पास रखिये और मुझे जैसा भी हो, वैसे ही रहने दीजिये।"

"क्या तुम्हें यह सन्देह है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ! हज़ार नहीं, दस हज़ार दूँगा। सच! मगर मैं यही चाहता हूँ कि आज तुम्हें जो कुछ मिले मुझे दे दो।" लखपति ने कहा।

"आइये, पाँच दस से इस बारे में सलाह मशवरा हो जाये, क्या बातें हैं ये!" मज़दूर ने ज़ोर से कहा।

यह सोच कि बिना रुपया देखे उसको विश्वास न होगा, वह घर जाकर पचास हज़ार रुपया लेकर कुली के घर आया।

"यह लो भाई, यह सारा धन तेरा है। पचास हज़ार। आने क्या सोच रहे हो, इसमें कोई मज़ाक नहीं है। परन्तु आज जो कुछ तुम्हें मिले, एक आना ही सही, पैसा ही सही, मुझे दे दो। दूँगा, शिव का प्रमाण करके कहो।" लखपति ने कहा।

यह सोच कि साक्षात् शिव ही उसको पैसे दे रहे थे। मज़दूर ने, लखपति ने जिस प्रकार शपथ करने के लिए कहा था, उस प्रकार किया। लखपति खुश हो घर चला गया। उसे खुशी थी कि कम से कम पचास हज़ार का तो फ़ायदा होगा ही।

शाम तक लखपति देखता रहा, फिर उसने मज़दूर के घर जाकर पूछा—"कहाँ

है! आज तुम्हें कितना मिला? जो कुछ मिला है, दे दो।" "हुजूर, मुझे एक पैसा भी आज नहीं मिला।" मजदूर ने कहा।

लखपति को लगा कि शिव, पार्वती, विघ्नेश्वर ने मिलकर उसे धोखा दिया था! वह घबराता घबराता शिवालय गया। वह मन्दिर में पैर रख रहा था कि फिर अन्दर से आवाज सुनाई पड़ी।

"बेटा विघ्नेश्वर, हमने उस मजदूर को लाख रुपये दिलवाने के लिए कहा था, दिलवाये कि नहीं!" शिव ने पूछा।

"लखपति से पचास हजार रुपये दिलवा दिये हैं। बाकी भी अभी दिलवाये देता हूँ।" विघ्नेश्वर ने कहा।

लखपति गरमा गया। वह अन्दर गया और विनायक की मूर्ति हाथ में पकड़कर पूछा—"उस दरिद्र को मेरा पैसा दिलवाने वाले तुम कौन होते हो!" क्या यही तुम्हारा दातृत्व है।"

तब मालूम है क्या हुआ! विघ्नेश्वर की सूंड ने लखपति के हाथ को पकड़ लिया। सेठ का हाथ इधर उधर न हिल सका।

"बाप रे बाप, यह क्या न्याय है! विघ्नेश्वर, मेरा हाथ छोड़।" लखपति गिड़गिड़ाया।

"जब तक तुम इस गरीब को और आधा लाख दे न दोगे, तब तक नहीं छोड़ूँगा।" विघ्नेश्वर ने कहा। क्या करता! लखपति के यह शपथ करने पर कि बाकी आधा लाख भी मजदूर को दे देगा, उसका हाथ छूट गया। कुछ भी हो, था तो शिव भक्त ही, उसने आधा लाख देकर दण्डवत किया।

"इसलिए भगवान भी जिनके पास होता है, उनसे लेकर उनको देते हैं, जिनके पास नहीं होता।" कहकर बाबा ने सुंघनी निकाली।

भेड़िये का रूप

ब्रिटेन के एक किले में एक सामन्त रहा करता था। वह युवक था और राजा का विश्वासपात्र भी। उसकी पत्नी बड़ी सुन्दर और पतिव्रता मालूम होती थी। परन्तु सच कहा जाये, तो उसका स्वभाव अच्छा न था। ऊपर से जितना पति के लिए प्रेम दिखाती थी, अन्दर से उससे उतना ही द्वेष करती थी। उसने एक और सामन्त से प्रेम किया। अपने पति को छोड़कर मौका मिलने पर उस सामन्त की पत्नी होना चाहती थी।

उसने अपने पति के बारे में एक बात मालूम की कि वह सप्ताह में तीन दिन कहीं जाकर आता। उन तीन दिनों में वह कहाँ जाता, क्या करता, न उसके नौकर चाकर जानते थे, न उसकी पत्नी ही।

उसकी पत्नी ने सोचा कि इसमें कोई रहस्य था और अगर इस रहस्य को जान लिया गया तो मेरा फायदा होगा। इसलिए उसने एक दिन अपने पति से कहा—"क्यों, आप सप्ताह में तीन दिन मुझे छोड़कर कहाँ चले जाते हैं! जानते हैं इसके कारण मुझे कितना कष्ट होता है।"

"मुझे लाचार हो जाना पड़ता है। नहीं तो क्या मैं तुम्हें छोड़कर एक क्षण भी रह सकता हूँ!" पति ने कहा।

"ऐसी भी क्या लाचारी है! ऐसा भी क्या काम है! मुझे भी तो कुछ बताइये।" पत्नी ने कहा।

जब उसने बहुत पूछा तो उससे यह शपथ करवाकर कि वह रहस्य किसी को

सुरेन्द्र

नहीं कहेगी, सामन्त ने कहा—"मैं सप्ताह में तीन रोज़ भेड़िये का रूप धारण करके जंगल में घूम आता हूँ, यह है मेरा मुकद्दर।"

"वन में जाकर मैं अपने सारे कपड़े एक जगह रख देता हूँ। तुरत मैं भेड़िया बन जाता हूँ। तीन दिन भेड़िया बनकर रहने के बाद अपने कपड़े पहिन लेता हूँ, तो मनुष्य हो जाता हूँ।" पति ने कहा।

"तो वे कपड़े कहाँ रखते हैं?" पत्नी ने इस नादानी से पूछा, जैसे केवल जानना ही चाहती हो।

"यह परम रहस्य है, किसी से कहने की बात नहीं है। क्योंकि यदि मुझे ये कपड़े न मिले, तो मुझे भेड़िये के रूप में ही रह जाना पड़ेगा।" पति ने कहा।

ये बातें सुन उस दुष्टा के मन में बड़ा सन्तोष हुआ। पर वह उसको मनाती गई कि वह रहस्य स्थल का पता बताये। यह विश्वास करके कि उसको उस पर अत्यन्त प्रेम था उसने कह दिया—"जंगल में एक उजड़ा मन्दिर है। उसके पास ही पौधों के बीच में, पत्थर में एक खोल है। उसी खोल में मैं अपने कपड़े रख देता हूँ।"

यह रहस्य मालूम होते ही उसे अपने पति से पिंड छुड़ाने का रास्ता मालूम हो गया। उसके जंगल में चले जाने के बाद उसने अपने प्रिय को बुलवाया और उससे अपने पति के बारे में सारा रहस्य बता दिया। उसकी इच्छा पर वह उजड़े मन्दिर के पास गया। उसके पति के कपड़े उसने लाकर उसकी पत्नी को दे दिये। उसने उनको अलमारी में रख दिये।

भेड़िये के रूप में सामन्त तीन दिन तक वन में घूमता रहा। फिर जब वह अपने कपड़ों के लिए आया तो उसको

वे न मिले। वह जान गया कि उसकी पत्नी ने उसे धोखा दिया था। पर वह ऐसी स्थिति में न था कि उससे बदला ले सके। क्योंकि वह भेड़िये के रूप में जंगल से जाता तो कुत्ते और मनुष्य वगैरह मिल मिलाकर उसकी जान ले सकते थे। इसलिए वह जंगल में ही रह गया।

कुछ समय तक पत्नी ने पति के लिए रोने का ढोंग किया। आखिर उसने प्रिय से विवाह कर लिया। वह बड़ी खुश थी कि उसकी चाल चल गई थी।

एक वर्ष तक सामन्त भेड़िये के रूप में जंगल में घूमता रहा। जो कोई दीखता उसको मारकर खा जाता। सचमुच वह भेड़िये की तरह जीता रहा।

राजा एक दिन वन में शिकार खेलने गया। उसके साथ कुत्तों को भेड़िये की गन्ध आयी। भोंकते भोंकते वे उसका पीछा करने लगे। और उसके साथी घोड़ों पर सवार हो कुत्तों का पीछा करने लगे।

भेड़िया शिकारी कुत्तों को बिना मिले दिन भर भागता रहा, पर वह बेहद थक गया। काँटे वगैरह उसके शरीर पर चुभ गये। वह मरने के लिए एक जगह खड़ा हो गया। इतने में उसने देखा कि कुत्ते और उनके साथ के आदमी पास आ रहे थे। उसने उस राजा को भी पहिचान लिया, जिसको उस पर इतना अभिमान था। तुरत वह राजा के पास आया, एक पैर रिकाब पर रख और मुँह राजा के पैर पर रख दिया।

यह विचित्र बात देख राजा चकित हो गया। "यह क्या! यह भेड़िया मुझसे क्यों शरण माँग रहा है! शिकारी कुत्तों को रोको। भेड़िये को जंगल में छोड़ दो।"

राजा ने तो भेड़िया छोड़ दिया, भेड़िये ने राजा को नहीं छोड़ा। घर वापिस जाते राजा के घोड़े के साथ लंगड़ाता, लंगड़ाता वह भी चला। यह देख दरबारियों को अचरज हुआ।

राजमहल तक आये हुए भेड़िये को देखकर राजा ने कहा—"शायद यह मेरी रक्षा चाहता है। मैं रक्षा दूँगा। रोज़ इसे मांस देकर इसका पालन पोषण कीजिए। कोई इसकी किसी प्रकार की हानि न करे।"

इसके बाद वह भेड़िया राजमहल में ही पालतू कुत्तों की तरह रहता, राजा के पीछे ही घूमता रहता। किसी को कभी तंग न करता। सीधा-सादा सा रहता। वह दिन भर राजा के पास रहता और सोते समय वह राजा के पलंग के नीचे सो जाता। राजा को अपने कुत्तों की अपेक्षा यह भेड़िया अधिक पसन्द आने लगा।

इसके कुछ दिनों बाद राजा ने किसी काम पर, अपने सब सामन्तों को दरबार में हाजिर होने के लिए बुलाया। इन सामन्तों में वह भी था, जिसने भेड़िये के रूप में जो था, उस सामन्त के कपड़े चुराकर, उसकी पत्नी से शादी करनेवाला

भी था। उसको देखते ही, भेड़िया उस पर लपका और उसने उसको नीचे गिरा दिया। इससे पहिले कि वह उसको मार सका, औरों ने भेड़िये को खींच लिया। उस दिन यही घटना तीन बार हुई। यह देख राजा चकित हो उठा।

वह भेड़िया, जो किसी का कुछ न बिगाड़ता था, क्यों उस सामन्त पर यों लपका था! यह सन्देह तो था ही राजा को अब एक भय भी होने लगा। भेड़िया उस सामन्त को मार सकता है, और सामन्त भेड़िये को मार सकते हैं। इनमें वह किसी घटना को भी नहीं चाहता था। इसलिए जब तक सब सामन्त चले नहीं गये, तब तक, उसने भेड़िये को जंजीरों में बाँधकर रख दिया।

इसके कुछ दिन बाद, राजा फिर उसी जंगल में शिकार के लिए गया और पहिले आरामगाह में ही उसने पड़ाव किया। यह आरामगाह उसी सामन्त का था, जो अब भेड़िये के रूप में था। यह जानकर कि राजा आये थे। सामन्त की पहली पत्नी ने राजा को खुश करके, अपने दूसरे पति का फायदा करने के लिए, बहुत से उपहार

नौकरों से छुवाकर, राजा के पास आयी। उसके राजा के सामने आते ही, राजा के पास खड़ा भेड़िया, उस पर लपका, उसने गले को फाड़ देना चाहा। इतने में वह स्त्री चिल्लायी। वहाँ उपस्थित लोग, तलवार लेकर, भेड़िये को मारने को बढ़े। राजा यदि उन्हें न रोकता, तो भेड़िया उस दिन वहाँ मर गया होता।

राजा ने, ताकि भेड़िये पर कोई आपत्ति न आये, हाथ पकड़ कर कहा—"इनका पहिला पति मेरा मित्र था। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ है? उसका क्या हो गया है? इसके दूसरे पति ने उसकी स्त्री को और उसकी सम्पत्ति को हस्तगत कर लिया है। यह भेड़िया, जो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता, इन दोनों को देखकर, गुस्सा दिखाता है, गरजता है। पहिले इन पति-पत्नी को ले जाकर काली कोठरी में डाल दो। फिर सचाई मालूम हो जायेगी।"

सामन्त की पत्नी को जब जेल में कुछ दिन काटने पड़ गये, तो उसने सब कुछ सच सच राजा से कह दिया।

राजा ने, अलमारी में से, सामन्त के कपड़े मँगवाये। उनको और भेड़िया को एक कमरे में रखा। थोड़ी देर में भेड़िया फिर मनुष्य हो गया।

राजा ने उसकी दुष्ट पत्नी को और उससे विवाह करनेवाले को देश निकाले की सज़ा दे दी। और अपने मित्र को उसकी सम्पत्ति फिर दिलवा दी। पर वह अपने किले में न रहकर राजा के पास ही उनकी सेवा में ही, सप्ताह में चार दिन मनुष्य के रूप में और तीन दिन भेड़िये के रूप में रहने लगा।

अरण्य काण्ड

आगे राम, पीछे सीता और उसके पीछे अस्त्र लिए लक्ष्मण और कितने ही मुनि चलते आ रहे थे। उन्होंने कितने ही पर्वत, नदी, नाले, पक्षी, हाथी, जंगली सूअर आदि देखे।

सूर्यास्त के समय वे एक सुन्दर झील के पास पहुँचे। झील की तह में से सुन्दर वाद्य-वादन सुनकर, राम लक्ष्मण ने चकित हो धर्मभृत मुनि से कहा—"यह क्या आश्चर्य है! यदि यह कोई रहस्य है, तो सुनाइये, सुनकर हमारा मन आनन्दित होगा।"

धर्मभृत ने उस झील के बारे में उन्हें बताया। उस झील का नाम पंचाप्सर था। इसको मान्डकर्णि ने अपनी तपस्या से बनाया था। उस महामुनि ने वायु भक्षण करते दस हजार वर्ष कठिन तपस्या की। तब अग्नि आदि देवता डर गये। वे जान गये कि वह उनमें से किसी का स्थान अवश्य लेकर रहेगा। इसलिए उसकी तपस्या भंग करने के लिए पाँच सुन्दर अप्सराओं को मान्डकर्णि के पास भेजा। मान्डकर्णि उन पर मुग्ध हो उठा। उसने अपनी तपश्शक्ति से यह झील बनाई।

फिर यौवन प्राप्त किया। पानी की तह में उसने अप्सराओं के लिए अदृश्य प्रासाद बनाये। उनको अपनी पत्नी बनाकर, नृत्य और संगीत में वह अपना काल-यापन कर रहा था।

धर्मभृत की कहानी सुनते सुनते राम लक्ष्मण आश्रमों के समीप पहुँचे। आश्रम वासियों ने राम लक्ष्मण का खूब आतिथ्य किया। राम अपनी पत्नी और लक्ष्मण के साथ किसी आश्रम में एक साल रहते, तो किसी में आठ मास, या छः मास, या तीन ही। इस तरह दस वर्ष बीत गये।

दस वर्ष बाद राम, सीता और लक्ष्मण सुतीक्ष्ण महामुनि के आश्रम में आये। वहाँ रहते हुए उन्होंने एक दिन महामुनि से कहा—"मैंने कई लोगों से सुना है कि कहीं यहाँ अगस्त्य मुनि रह रहे हैं। पर किसी ने ठीक ठीक यह नहीं बताया कि उनका आश्रम कहाँ है। अगर आपको मालूम हो, तो हम तीनों जाकर उनके दर्शन कर लेंगे। मैं उनकी सेवा शुश्रूषा करना चाहता हूँ।"

यह सुनते ही सुतीक्ष्ण ने कहा—"मैं भी तुम्हें यही सलाह देना चाहता था। इस बीच तुम ही पूछ बैठे। यहाँ से दक्षिण की ओर चार योजन दूर जाने पर अगस्त्य के भाई का आश्रम आता है। वहाँ से एक योजन दूरी पर अगस्त्य का आश्रम है। वे बहुत सुन्दर आश्रम है। वहाँ तुम तीनों आराम से रह सकोगे। अगर जाना चाहें, तो तुरत जाइये।"

राम ने उनको नमस्कार किया। सीता और लक्ष्मण को लेकर, अगस्त्य महामुनि के भाई के आश्रम में पहुँचे। उस समय राम ने लक्ष्मण को अगस्त्य की महिमा सुनाते हुए वातापि और इल्वल का वृत्तान्त सुनाया।

हल्वल और वातापि दो राक्षस थे। उन्होंने कितने ही ब्राह्मणों को ठगकर खा लिया था। हल्वल ब्राह्मण वेष धारण कर, संस्कृत में बातचीत करता, ब्राह्मणों के पास जाता—"महाशय, आज हमारे घर श्राद्ध है, आप कृपा करके भोजन के लिए आइये।" ब्राह्मण इसे सच मानकर आया करते। इस बीच वातापि बकरी का वेष धारण करता। हल्वल उस बकरी को काटकर, ब्राह्मणों को देता। ब्राह्मण जब बकरी खा लेते, तब हल्वल कहता—"वातापि अब आ जाओ।" तब वातापि बकरी की तरह मिमियाता, ब्राह्मणों का पेट फाड़कर बाहर आ जाता।

इस तरह जब उन्होंने अनेक ब्राह्मणों को मार दिया, तो हल्वल को एक दिन अगस्त्य दिखाई दिये। हल्वल की प्रार्थना पर वे भी भोजन के लिए आये। उन्होंने भी माँस खाया। जब उन्होंने अच्छी तरह खा पी लिया, तो हल्वल ने उसको हाथ धोने के लिए पानी देते हुए कहा—"अब आ जाओ, वातापि।"

अगस्त्य ने हँसते हुए कहा—"अरे अब कहाँ है वातापि! वह तो कभी का मरकर यम के पास चला गया है।" हल्वल यह जान कि उसका भाई मर गया था, बड़ा गरमाया। वह अगस्त्य पर लपका, पर उनकी नजरों में इतनी गर्मी थी कि वह जलकर राख हो गया।

राम ने यह कहानी सुनाकर लक्ष्मण से कहा—"यह उतने शक्तिशाली अगस्त्य ऋषि के भाई का आश्रम है।" तब तक सूर्यास्त हो चुका था। अगस्त्य के भाई ने सीता, राम, लक्ष्मण का आतिथ्य किया। उन्होंने रात वहीं काटी। अगले दिन सवेरे उससे विदा लेकर, वे अगस्त्य आश्रम

की ओर निकले। रास्ते में उनको ऐसे पेड़ दिखाई दिये, जिनको हाथियों ने उखाड़ दिया था। पक्षियों का मधुर गान सुनाई दिया। राम और लक्ष्मण ने पाया कि अगस्त्य के समीप का प्रान्त, जंगल की तरह कोलाहलपूर्ण न होकर, बिल्कुल शान्त और सुन्दर था।

राम ने लक्ष्मण से कहा—"अगस्त्य बहुत बड़े मुनि हैं। इन्होंने विन्ध्याचल को रोक दिया, जो कि सूर्य के मार्ग का रोक रहा था। जब वे आकर दक्षिण में बस गये, तो दक्षिण को अगस्त्य दिशा भी कहा जाने लगा। उनका आश्रम बहुत पवित्र है। उसमें क्रूर, वंचक, पापी, नहीं रह सकते। हम अब ऐसी जगह आये हैं। लक्ष्मण तुम पहिले जाओ और अगस्त्य से कहो कि मैं और सीता आ रहे हैं।"

लक्ष्मण ने आश्रम में प्रवेश करके अगस्त्य के एक शिष्य को पकड़कर कहा—"मैं दशरथ महाराजा का लड़का हूँ। मैं और मेरे भाई राम और उनकी पत्नी सीता, अगस्त्य मुनि के दर्शन करने आये हैं। इसलिए जाकर उनसे यह कहिये।"

अगस्त्य तब अग्निहोत्र गृह में थे। शिष्य ने जाकर यह खबर दी। तुरत अगस्त्य ने कहा—"मैं सोच ही रहा था कि वे आयेंगे। वे आश्रम में आने के योग्य हैं। तुरत तुम जाकर उन्हें लिवाकर लाओ। अन्दर लाओ।"

शिष्य ने जल्दी-जल्दी आकर लक्ष्मण से कहा—"सीता और राम कहाँ हैं! उनको तुरत बुलाइये।"

दोनों मिलकर आश्रम के द्वार तक आये। शिष्य ने विनयपूर्वक राम और लक्ष्मण का स्वागत किया। अगस्त्य सूर्य की कान्ति की तरह चमचमाते, उनका

स्वागत करने आये। राम भी अगस्त्य को उनके तेज के कारण पहिचान गये। सीता, राम और लक्ष्मण ने उनके चरण छुये और हाथ बाँधकर खड़े हो गये।

अगस्त्य ने उनको अतिथि के रूप में स्वीकार किया। उनको आसन व अर्घ्य आदि दिये। कन्दमूल और फल आदि भी उनको दिये।

अगस्त्य के पास एक असाधारण धनुष था। वह विष्णु का था। उस पर रत्न जड़े हुए थे। उसे विश्वकर्मा ने तैयार किया था। ब्रह्मा का दिया हुआ एक अपूर्व बाण, इन्द्र के दिये हुए दो अक्षय तुणीर और सोने की मूठवाली तल्वार थी। इन सबको अगस्त्य मुनि ने राम को उपहार में दे दिये।

फिर उसने राम से कहा—"आप मुझे नमस्कार करने के लिए इतने दूर आये, यह जान मुझे बहुत सन्तोष है। आप सब थक गये होंगे। यह कोमल सीता, जिसने आपत्काल में पति का साथ कभी न छोड़ा, ऐसी प्रतिव्रता तो और भी थक गई होगी। इसलिए आप सब विश्राम कीजिये।"

"कोई ऐसा स्थल बताइये, जहाँ हम अरण्यवास के पूरा होने तक आश्रम बनाकर रह सकें।" राम ने अगस्त्य से पूछा।

"यहाँ से दो योजन दूरी पर पंचवटी है। वहाँ पानी और कन्द मूल खूब हैं। हरिण भी हैं। वहाँ आप आश्रम बना सकते हो। आपका वनवास तो बहुत कुछ समाप्त ही हो गया है। जो थोड़ा बहुत रह गया है, उसे पूरा करके अयोध्या जाकर सुखपूर्वक राज्य कीजिये। आप चाहें तो मेरे ही आश्रम में ही रह जाइये। पर

उनके बताये हुए मार्ग पर चलने लगे। रास्ते में उनको बहुत बड़ा पक्षी दिखाई दिया। राम लक्ष्मण ने यह सोचकर कि कोई राक्षस होगा, पूछा—"तुम कौन हो?" उस पक्षी ने उनसे यों कहा—"मैं आपके पिता दशरथ का मित्र हूँ। मैं अपने बारे में बताता हूँ। दक्ष प्रजापति के साठ लड़कियाँ थीं। उनमें से आठ से कश्यप ने विवाह किया। उनमें से ताम्र ने पाँच लड़कियों को जन्म दिया। उनसे एक शुकि थी। शुकि की लड़की का नाम नट था। नट की लड़की विनता था, विनता के गरुड़ और अरुण दो लड़के पैदा हुए। अरुण हमारा पिता है, श्येनि हमारी माँ है। मेरा एक भाई है, जिसका नाम सम्पाति है। मेरा नाम जटायु है। यह बड़ा भयंकर जंगल है। कितने ही क्रूर पशु हैं। कितने ही राक्षस हैं। इसलिए यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो आपके साथ रहकर, मैं आपकी रक्षा करूँगा। जब आप दोनों कहीं चले जायेंगे, तो मैं उनकी रक्षा करूँगा।"

जटायु का वृत्तान्त सुन, राम बड़े सन्तुष्ट हुए और आनन्द के साथ उसका आलिंगन

लगता है, आप अलग आश्रम में रहना चाहते हैं। इसलिए ही मैंने पंचवटी का नाम बताया है। वह बड़ी सुन्दर जगह है, सीता को खूब भायेगी। वह जो वृक्ष समूह दिखाई दे रहा है, उसके उत्तर में जाने पर एक वटवृक्ष आयेगा। उसके बाद जाने पर एक टीला आयेगा। उस टीला पर खड़े होकर देखने से एक पर्वत और उसके पास गोदावरी नदी दिखाई देगी।" अगस्त्य ने बताया।

सीता, राम और लक्ष्मण ने अगस्त्य को नमस्कार किया। उनकी अनुमति पर वे
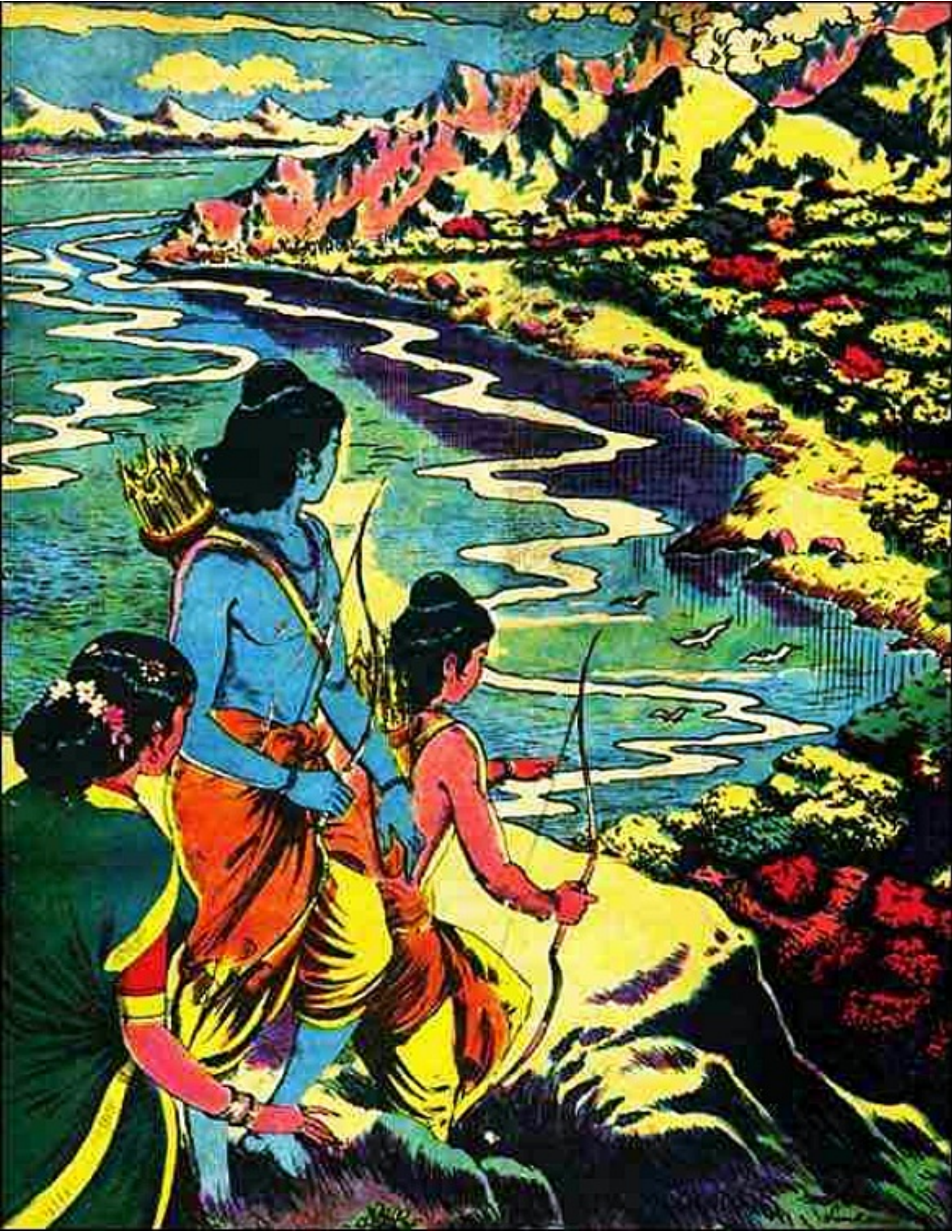
किया। अपने पिता के बारे में बातचीत करते रहे। सीता और लक्ष्मण, जटायु के साथ पंचवटी पहुँच गये। पंचवटी विष सर्पों से और क्रूर मृगों से भरी पड़ी थी। घने घने वृक्ष थे।

"लक्ष्मण, यह ही पंचवटी है। मेरे लिये, अपने लिये और सीता के लिए ऐसी जगह पर्णशाला बनाओ, जहाँ रेत के टीले हों। दूब हो, पानी आदि की सुविधा हो और हम आराम से रह सकें।" राम ने कहा।

"भाई, तुम ही ऐसी जगह देखो और पर्णशाला बनाने की आज्ञा दो। मैं आज्ञा का पालन करूँगा।" लक्ष्मण ने कहा।

राम ने एक समान जगह देखी। वहाँ लक्ष्मण से पर्णशाला बनाने के लिए कहा। वह जगह गोदावरी के पास थी। लक्ष्मण ने वहाँ खोद-खादकर दीवार बनाई। बड़े बड़े खम्भे रखे। उन पर बाँस डालकर उन पर पत्ते फूस आदि डाल दिये। इस तरह बड़ी सुन्दर पर्णशाला बन गई। लक्ष्मण ने पर्णशाला के अन्दर की ज़मीन अच्छी तरह साफ़ कर दी।

राम गोदावरी में जाकर स्नान करके, पद्म और फल लाये। लक्ष्मण ने पर्णशाला को पुष्प बलि करके शान्ति की।

इतना काम किया था इसलिए राम ने लक्ष्मण को प्रेम से गले लगाकर कहा—"लक्ष्मण, तुम मेरी इस तरह देखभाल कर रहे हो कि मुझे लगता है कि हमारे पिता अब भी जीवित हैं।"

उस पर्णशाला में सीता, राम और लक्ष्मण सुखपूर्वक रहने लगे।

केसरी नाम के बन्दर की पत्नी थी अंजना। जब केसरी सन्यास लेकर तपस्या करने चला गया तो अंजना ने वायुदेव की आराधना की और उसके अनुग्रह से उसने एक लड़के को जन्म दिया।

पैदा होते ही, आंजनेय सूर्य को देख उसे निगलने गया। जब राहु ने उसे रोका तो उसे पकड़ना चाहा। राहु ने जाकर इन्द्र से शिकायत की।

इन्द्र ऐरावत पर सवार होकर आया, उसने अपने वज्र से आंजनेय के गालों पर प्रहार किया। आंजनेय मूर्छित हो गया। वायुदेव क्रुद्ध हो कहीं चला गया।

वायु के न होने से सारे लोक छटपटाने लगे। देवताओं ने जाकर ब्रह्मा से कहा। ब्रह्मा ने जाकर वायु देवता को मनाया। वायु कुछ नरम हुआ। उसने अपने लड़के को लाकर, देवताओं से आशीर्वाद दिलवाया।

हनुमान सुग्रीव का मन्त्री बनकर ऋष्यमूक पर रहने लगा, तब राम और लक्ष्मण सीता को ढूंढते आये। हनुमान ने उनका सुग्रीव से परिचय किया।

जब बन्दर सीता को खोजते चारों दिशाओं में निकल गये, तो राम ने अपनी अंगूठी हनुमान को दी। बन्दरों को संपाति के द्वारा सीता का ठिकाने का पता लगा।

रावण सीता को उठा ले गया था और वह लंका में थी। कौन समुद्र पारकर, लंका जा सकता था ? बाकी बन्दरों ने निश्चय किया कि हनुमान ही जा सकता था। हनुमान मान गया और हवा में उड़कर समुद्र के ऊपर जाने लगा। रास्ते में मैनाक पर्वत पर कुछ विश्राम किया। फिर वह निकल पड़ा।

सुरस नाम की राक्षसी ने हनुमान का रास्ता रोका। हनुमान ने सूक्ष्म शरीर कर लिया और सुरस के बीच में से निकलकर लंका चला गया। लंका नाम की राक्षसी को मारकर नगर में प्रविष्ट हुआ।

लंका में खोजने पर उसको अशोकवन दिखाई दिया। हनुमान सीता से एकान्त में मिला, राम की मुद्रिका दिखाकर, उनको साथ आने के लिए कहा। पर सीता न मानी।

हनुमान लंका में वन, जल यंत्र ध्वंस करने लगा। जिस किसी राक्षस ने उसे रोका, उसे खूब पीटा। रावण के भेजे हुए जम्बुमालि और अक्षय कुमार को भी मार दिया।

आखिर इन्द्रजित ने आकर ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया और हनुमान को बाँधकर रावण के पास ले गया। हनुमान की बातें सुनकर रावण खीझ उठा।

रावण ने दण्ड दिया कि हनुमान की पूंछ पर कपड़े लपेटकर, उस पर आग लगा दी जाय। हनुमान ने अपनी जलती पूंछ से सारी लंका जला दी।

सीता का पता मालूम होने के बाद राम वानर सेना के साथ लंका आये। रावण से युद्ध प्रारम्भ किया। हनुमान राम का वाहन बना। इन्द्रजित से युद्ध करते करते लक्ष्मण मूर्छित हो गया।

हनुमान औषधि पर्वत लाया। काम होने के बाद, उसने उस पर्वत को यथास्थान रख दिया। रावण से युद्ध करना, लक्ष्मण फिर मूर्छित हुआ। हनुमान फिर निकला।

कालनेमि नामक राक्षस पहिले ही आकर मुनिवेश में पर्वत पर था। हनुमान प्यासा था, उसने जब पानी माँगा तो कालनेमि ने मगरोंवाला तालाब दिखाया। उसने उस मगर को मार दिया, जिसने उसे पकड़ा था।

वह मगर धान्यमाली नामक दिव्य स्त्री बन गई और उसने बताया कि कालनेमी राक्षस था। हनुमान ने कालनेमि को भी मार दिया। परन्तु संजीविनी देने के लिए गन्धर्व न माने।

हनुमान गन्धर्व को हराकर, पर्वत लेकर जब जा रहा था, तो कालनेमि के पिता मल्यवन्त ने अपने परिवार के साथ हनुमान पर आक्रमण किया और पराजित हो गया।

राम और रावण के युद्ध में हनुमान ने खड्गरोम आदि राक्षसों को मार दिया। राम और लक्ष्मण के हाथ कई राक्षस मारे गये। आखिर रावण भी मारा गया।

राम के विजय की वार्ता हनुमान ने सीता तक पहुँचायी। वह राम से पहिले निकला। गुह और भरत को भी उसने यह बताया। राम के पट्टाभिषेक के बाद वह किष्किन्धा चला आया।

द्वापर युग आया। पाण्डव अरण्यवास कर रहे थे। भीम जब सौगन्धिक के अपहरण के लिए निकला, तो रास्ते में पड़े हुए हनुमान को उसने हटने के लिए कहा।

"बूढ़ा हूँ। हिल नहीं सकता।" हनुमान ने कहा। भीम हनुमान की पूँछ भी न हिला सका। दोनों हाथ लगाकर उसने देखा, तब भी न हिला सका।

भीम जान गया कि जिसे उसने बन्दर समझा था। वह वस्तुतः हनुमान था। भीम ने माफी माँगी। उससे कुरुक्षेत्र के युद्ध में सहायता करने के लिए कहा। हनुमान इसके लिए मान गया। वह अर्जुन के रथ की पताका में चिन्ह के रूप में रहा।

११. इन्का पुल

अर्जेन्टीना के अंडीस पर्वतों में समुद्र तल से ९००० फीट ऊँचे यह इन्का का पुल प्राकृतिक रूप से बन गया है। मेन्डोजा नदी ने सदियों से पर्वत को काटकर इस पुल को बनाया है। इस पुल के नीचे वह नदी ही बहती है।